मेघदूत

डॉ. राणा प्रताप सिंह 'राणा गन्नौरी'

मेघदूत
डॉ. राणा प्रताप सिंह 'राणा गन्नौरी'
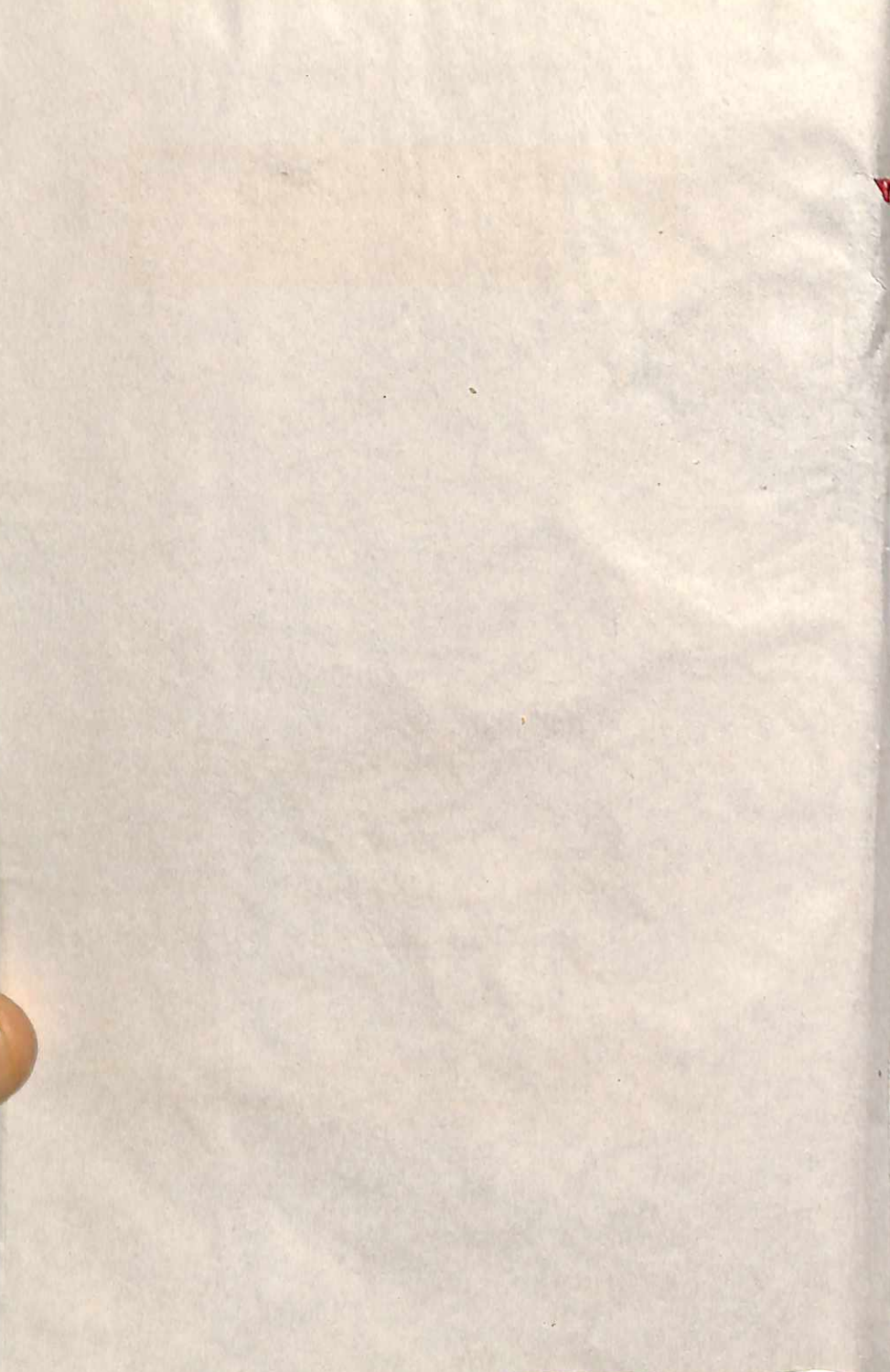
(महाकवि कालिदास)

उर्दू में मनजूम तर्जुमा (पद्यानुवाद)

मुतर्जम (अनुवादक)
डा० राणा प्रताप सिंह
"राणा" गन्नौरी

१५६०, सैक्टर १२, हुडा,
पानीपत (हरियाणा), भारत - १३२१०३

सम्पर्कः-
१-आरती प्रकाशन वार्ड नं.-२, सितारगंज़,
जि. ऊ. सिं. नगर, २६२४०५,
स्वरदूतः-०५९४८-२५३४५२,९४१२५४०१७५,

२-डॉ. राणा प्रताप सिंह 'गन्नौरी'
१५६०, सै.-१२, हुडा, पानीपत-१३२१०३,
स्वरदूतः०१८०-२६६५९२८,
मो.९८९६००४५४५

३-हिंदी बुक सैंटर, ४/५बी., आसिफ़अली रोड,
नई दिल्ली-२
४-अक्षरधाम,
उपायुक्त निवास के सामने,
करनाल मार्ग, कैथल-१३६०२७

५. श्री मती सुदर्शन डोगरा
एच. आई. जी.२९, सै. ४, परवाणु

प्रकाशक

आरती प्रकाशन
वार्ड नं२, सितारगंज, २६२४०५
भारत सरकार से मान्यता प्राप्त पंजीकृत संख्या :
F.N. 901754/ I.S.B.N: 2003

संस्करण : प्रथम; मार्च-२००५ ई०
आवरण : आशा शैली
टाइप सैटिंग : रुचि छल
मुद्रक : सैनी कम्प्यूटर्स एंड ऑफसेट प्रिन्टर्स

मूल्य : 80/-

meghdoot(Poetic Translation From Sanskrit- by Dr. Rana Partap Singh Gannuri)

समर्पण

प्रेम की पीड़ा
एवं
विरह की व्यथा
के
प्रति

महाकवि कालिदास से निवेदन

माहिरे- जज़्बात कहते हैं तुझे,
शाहे-तश्बीहात[1] कहते हैं तुझे ।

तेरी तख़्लीकात[2] की क्या बात है,
माहिराने-फ़न[3] में तेरी ज़ात है ।

काश मेय्यारे-सुख़न[4] वह पा सकूँ
जौहरे-लौहो-कलम[5] दिखला सकूँ ।

सेहरकुन एजाज़[6] तेरा मेघदूत,
बन सके ऐसा ही मेरा मेघदूत ।

१.उपमा सम्राट, २.कृतियों, ३.कला मर्मज्ञ,४.काव्य का उच्च स्तर,
५.लेखनी का कौशल, ६.मुग्धकारी चमत्कार

कहते हैं लोग क्या मेघदूत के अनुवाद के बारे में

''मेघदूत पढ़ रहा हूँ और आप को याद कर रहा हूँ। आपकी यह अदबी ख़िदमत वाकई बहुत बड़ा कारनामा है, जिसे अदबी दुनिया हमेशा याद रखेगी। This book of yours can stand test of all times

मैकश अम्बालवी, यमुनानगर

एक ज़बान से दूसरी ज़बान में तर्जुमा करना एक मुश्किल काम है। इसके लिए दोनों ज़बानों के मिज़ाज से वाकिफ़ होना ज़रूरी है। फिर जब वह तर्जुमा नज़्म में किया जा रहा हो तो और भी दुश्वार हो जाता है। तर्जुमे की सबसे बड़ी ख़ूबी यह है कि वह तर्जुमा महसूस न हो। 'राणा' साहब ने इस सिलसिले में बड़ी काविश से काम लिया है। मैं उनकी कामयाबी के लिए दुआगो हूँ।

उस्तादे-मुहतरम

स्व. किबला जैमिनी 'सरशार' साहब

आहिस्ता-आहिस्ता आज मेघदूत के आख़िरी सफ़े तक पंहुचा। पहले सफ़े से एक अजीब सी सरशारी का अहसास जो दिला-दिमाग़ को छू गया था आख़िरी सफ़े तक कायम रहा। आपकी यह तख़लीक (कृति) जाविदां रहेगी ।

सुरेश चन्द्र 'शौक' शिमलवी

तीनों पुस्तकें प्राप्त हुईं। विशेषकर 'मेघदूत' के कुछ अंश पुस्तकें प्राप्त होते ही पढ़ लिए। बहुत आनन्द प्राप्त हुआ और हृदय से साधुवाद के शब्द स्वतः ही फूट पड़े। आप की संवेदना, समर्पण भावना और सकारात्मक-व्यापक दृष्टिकोण को स्वीकारना ही होगा।

शशि टण्डन, 'आगरा'

''संस्कृत की अज़ीम नज़्म 'मेघदूत'का उर्दू तर्जुमा वह भी नज़्म में कोई आसान काम नहीं था। 'राणा' गन्नौरी साहब ने बड़े खुलूस और सच्चाई के साथ तर्जुमा किया है।

जनाब शमीम करहानी

"मैंने और भी तर्जुमे देखे हैं ....आपने जिस आसानी (सहजता) से तर्जुमा किया है वह आपका ही मुकाम है । जिसके लिए आप को मुबारकबाद । तर्जुमा और वह भी मनजूम (पद्यात्मक), शेर कहने से भी ज़्यादा सख्त है जिसको आपने इस खूबी से किया है कि बग़ैर दाद दिए तबियत नहीं मानती ।"

अनीस अहमद ख़ाँ 'अनीस'
अधिवक्ता सर्वोच्च न्यायालय नई दिल्ली

डॉ० राणा गन्नौरी ने मेघदूत के प्रकाशनार्थ विभागीय अनुमति प्राप्त करने हेतु इसकी पाँडुलिपि शिक्षा विभाग को भेजी है जिसे शिक्षाधिकारी के नाते पढ़ने का मुझे अवसर मिला है । मैं इसको पढ़ता हुआ जैसे-जैसे आगे बढ़ता गया हूँ वैसे-वैसे मुझे अधिक रस आता गया है । डॉ० राणा गन्नौरी ने यह अनुवाद करके बहुत बड़ा काम किया है । मैं उन्हें हार्दिक बधाई देता हूँ ।

डॉ0 एस0 एन0 राव,
पूर्व शिक्षाधिकारी दिल्ली

"मेघदूत कालिदास का शाहकार है । उर्दू में सर्वश्री प्रभुदयाल 'आशिक', प्यारेलाल 'शाकिर', गजपत शरण दास और 'सलाम मछली शहरी' ने इसे अपने अंदाज़ में नज़्म किया है । डॉ० राणा प्रताप सिंह 'राणा' गन्नौरी ने मेघदूत का तर्जुमा करके बड़ी ज़िम्मेदारी का काम सरंजाम दिया है । मैं उनका यह तर्जुमा देख कर बहुत ख़ुश हुआ हूँ । उन्होंने यह तर्जुमा बड़े शौक और तनदेही (परिश्रम) से किया है । मैं उनको मुबारकबाद देता हूँ और मेरी दुआ है कि उनके इस तर्जुमे की दाद अहले-नज़र दिल खोल कर दें ।"

स्व0 अल्लामा मुन्नवर लखनवी

'मेघदूत' का यह अनुवाद, (Translation) सिर्फ़ अनुवाद ही नहीं, बल्कि (Transcreation) अनुसृजन है ।

डॉ. इन्द्रनाथ मदान,
पूर्वाध्यक्ष हिंदी विभाग पंजाब वि.वि. चण्डीगढ़

महाकवि कालिदास और उनका मेघदूत

संस्कृत के मूर्धन्य कवि 'महाकवि कालिदास' अवंति के राजा विक्रमादित्य के नवरत्नों में से एक थे। महाकवि कालिदास अपनी सात उत्कृष्ट रचनाओं (चार काव्य-कुमार सम्भव, रघुवंश, ऋतु संहार, मेघदूत) और तीन नाटकों (अभिज्ञान शाकुंतलम्, मालविकाग्निमित्रं और विक्रमोर्वशीयम्) के साथ साहित्याकाश पर इस प्रकार सुशोभित हुए हैं जैसे आकाश में सप्त ऋषियों के साथ ध्रुव तारा और जिस तरह समुद्री यात्रा में ध्रुवतारा नाविकों को दिशानिर्देश करता है ठीक उसी प्रकार साहित्य-सागर में उतरने वाले कलमकारों का दिशानिर्देश कालिदास ने किया है। कालिदास की रचनाओं के अनुवाद विश्व भर की विभिन्न भाषाओं में हुए और सराहे गये हैं। मेघदूत के भी देशी और विदेशी भाषाओं में अनुवाद किये गये। उर्दू में मुझसे पूर्व भी मेघदूत का अनुवाद स्व० प्रभुदयाल आशिक, स्व० प्यारेलाल 'शाकिर' मेरठी, स्व० गजपत सरणदास, स्व० 'सलाम मछली शहरी', ने अपने-अपने अंदाज़ में किया है। मैंने भी इस सुविख्यात काव्यकृति का पद्यानुवाद पूरी निष्ठा से करने का प्रयास किया है। इस अनुवाद के फ़ारसी लिपि में दो संस्करण १९७० और १९८६ में प्रकाशित हो कर पाठकों एवं समीक्षकों द्वारा सराहे जा चुके हैं। अनुवाद में रुचि रखने वाले किंतु फ़ारसी न जानने वाले पाठक वृंद की सुविधा के लिए ही मैं इसका देवनागरी लिपि में लिप्यांतरण प्रस्तुत कर रहा हूँ। वैसे भी मेरी भाषा गंगा-जमनी है, फिर भी उर्दू के कठिन शब्दों के अर्थ पाद टिप्पणियों के रूप में दे दिये गये हैं।

मेरा प्रयास रहा है कि अनुवाद सहज और मूल के यथा संभव निकट रहे। मूल मेघदूत की तरह मैंने भी एक ही छंद का निर्वाह किया है। अलग-अलग श्लोकों का अनुवाद मुक्तकों में करते हुए तथा कालिदास की उपमाओं एवं उत्प्रेक्षाओं को सुरक्षित रखते हुए उर्दू भाषा के स्वभाव एवं प्रवाह की भी मैंने रक्षा करने की कोशिश की है।

कालिदास के मेघदूत के अतिरिक्त 'योग वशिष्ठ' में भी एक संक्षिप्त सा मेघदूत मिलता है। दोनों की तुलना करें तो कल्पनागत साम्य दृष्टि गोचर होता है किंतु कालिदास ने अपने मेघदूत को एक उत्कृष्ट एवं मार्मिक विरह

काव्य बना दिया है जो परवर्ती अनेक दूतकाव्यों का प्रेरक बन गया है । मेघदूत की कथा संक्षिप्त सी है । यक्ष अलकापुरी-नरेश कुबेर का अनुचर है । उसका हाल ही में विवाह हुआ है । पत्नी के प्रेम में निमग्न यक्ष से कर्तव्य पालन में कुछ त्रुटि हो जाती है, जिसके दण्डस्वरूप उसे एक वर्ष के लिए घर से दूर विंध्याचल पर भेज दिया जाता है । वर्षारम्भ होने पर घटाएं घिर कर आती हैं तो उसके सुप्त भाव मचल उठते हैं । वह अपनी प्रिया को अपना कुशल समाचार भेजना चाहता है और आश्वस्त करना चाहता है कि वह उसे भूला नहीं है, बल्कि हर समय उसी की याद में डूबा रहता है । इस संदेश को ले जाने के लिए वह मेघ को दूत बनाता है । उसे अपना मित्र बनाकर अलकापुरी और अपने घर का रास्ता बताता है । पत्नी की पहचान बताता है और उसके बाद अपना संदेश कहता है । बस, इतनी कहानी है मेघदूत की जिसे कालिदास की काव्य प्रतिभा ने एक अद्वित्तीय विरह काव्य बना दिया है।

मेघदूत की उपमाएं सुंदर हैं । पर्वत से सटे बादल की उपमा मिट्टी कुरेदते हाथी से, इन्द्रधनुष की उपमा मोरपंख से, तटों से हटकर बहती गम्भीरा नदी के जल की उपमा प्रिय के आगमन पर रमणी के तन से खिसक कर नीचे हो गये रेशमी साड़ी के आँचल से, सुंदरियों के नेत्रों की उपमा भँवरों से, यक्ष के वीरान घर की उपमा माली से रहित उपवन से, ख़स्ता हाल यक्षिणी की उपमा पाले से मुर्झाई हुई कँवल की बेल से आदि ।

यक्षिणी एक आदर्श भारतीय विरहिणी स्त्री है जो पति से वियुक्तावस्था में धरती पर सोती है, बाल नहीं संवारती, नाखुन नहीं काटती, आँखों में काजल नहीं लगाती, हर प्रकार की सज्जा त्याग चुकी है । बस देव पूजा, विरहगीतों को गाने अथवा पति के चित्र बना-बना कर समय बिताने का उपक्रम करती रहती है । वह सौंदर्य की मूर्ति है जिसे कालिदास ने विधाता की सर्वोत्तम रचना कहा है ।

यक्ष ने मेघ को अलकापुरी का जो मार्ग निर्दिष्ट किया है वह कवि के भोगौलिक ज्ञान का सूचक है । रामगिरि (नागपुर के उत्तर में रामटेक जहाँ यक्ष रहा है) माल भूमि, आम्रकूट, विंध्याचल, नर्वदा या रेवा नदी, दशारण, बेतवा नदी, विदिशा या भीलसा का निकटवर्ती पर्वत नीलगिरि, उज्जैन, निर्विंध्या नदी, उज्जैन का महाकाल ज्योतिर्लिंग शिव मंदिर, गंभीरा नदी, देवगिरि, चर्मणवती (चम्बल) नदी, ब्रह्मावर्त, (सरस्वती एवं दृशद्वती नदियों का मध्य वर्ती क्षेत्र), कनखल, जाह्नवी (गंगा), क्रौंचरंध्र (हिमालय के मार्ग

में एक तंग पहाड़ी दर्रा), कैलाश (शिवजी का हिमाच्छादित धाम), अलकापुरी (कुबेर की कैलाश स्थित राजधानी तथा धनाढ्यों की नगरी) और मानसरोवर (हिमालय पर स्थित विख्यात झील जिसमें राजहंस रहते हैं) है ।

मेघदूत के प्रथम भाग (पूर्वमेघ) में उत्तरी भारत का भौगोलिक वर्णन है और द्वित्तीय भाग (उत्तर मेघ) में यक्षिणी की मनोदशा एवं विरहावस्था का मार्मिक वर्णन है ।

मेघदूत पर महर्षि बाल्मीकि कृत रामायण की कथा एवं पात्रों की छाया स्पष्ट देखी जा सकती है । इससे कालिदास के देश प्रेम, कला-कौशल एवं मानव मनोविज्ञान के विस्तृत ज्ञान का परिचय मिलता है ।

आशा करनी चाहिए कि पाठक मेरे द्वारा किए गये इस अनुवाद को पसंद करेंगे । इसमें जो कुछ अच्छा है वह कालिदास का है उसकी प्रशंसा के अधिकारी कालिदास ही हैं । जो कमियाँ, त्रुटियाँ, एवं स्खलन है वह मेरा है, उसके लिए उदारमना पाठक मुझे क्षमा करेंगे । उन सभी गुणी बंधुओं का आभारी हूँ जिनकी टिप्पणियाँ "कहते हैं लोग क्या" के अंतर्गत दी गई हैं । इस मेघदूत के प्रकाशन के लिए आरती प्रकाशन का भी आभार व्यक्त करता हूँ ।

राणा प्रताप गन्नौरी

१५६०, सै0 १२, हुड्डा पानीपत, (हरियाणा),

१३२१०३

मेघदूत-१०

डॉ. राणा प्रताप सिंह गन्नौरी अपनी प्रतिष्ठित कहानीकार बिटिया प्रतिभा के साथ

''मीठे बोल'' का लोकार्पण सांसद श्री अरविंद शर्मा जी के कर कमलों द्वारा दिनांक २४.३.०५ को आर्य कालेज पानीपत के पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर, साथ खड़े हैं प्राचार्य डॉ. के.एल. मिगलानी

अगस्त १९९५, डॉ. राणा गन्नौरी, हरियाणा उर्दू अकादमी द्वारा प्रदत्त राष्ट्रीय स्तर का अवार्ड, तत्कालीन राज्यपाल महामहिम श्री महावीर प्रसाद जी के कर कमलों द्वारा प्राप्त करते हुए। साथ खड़े हैं तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री भजनलाल, शिक्षमंत्री श्री मुलाना जी तथा अकादमी के सचिव श्री कश्मीरी लाल 'ज़ाकिर'

संस्कृत विभागाध्यक्ष तथा साहित्य सभा कैथल के पूर्व अध्यक्ष डॉ. बी. डी. निर्मोही के साथ

पूर्व मेघ
(भाग एक)

श्लोक -१

सरज़द हुई थी फ़र्ज़ में उससे कोई ख़ता
जिससे मिली थी यक्ष को इक साल की सज़ा
रहना था उसके तहत उसे, अपने घर से दूर
सहने को ग़म फ़िराक-ए-शरीक-ए-हयात[१] का
कहते हैं जिसको रामगिरि उस पहाड़ पर
फ़ुरक़त-नसीब[२] ने था ठिकाना बना लिया
इक झील आबे-पाक[३] की भी थी वहाँ जिसे
सीता ने अपने ग़ुस्ल[४] से था पाकतर किया ।

श्लोक-२

फ़र्ते-ग़मे-फ़िराक[५] से था ज़ोफ़[६] इस कदर
सोने का जो कड़ा था कलाई से गिर गया
फ़ुरक़त के चंद माह बिताए कि एक रोज़
बादल को उस पहाड़ से देखा मिला हुआ
ऐसा लगा था यक्ष को जैसे कि फ़ीले-मस्त[७]
दांतों से अपने हो कहीं मिट्टी कुरेदता ।

१.जीवन संगिनी की विरह-वेदना, २. विरही, ३.पवित्र जल, ४. स्नान, ५. विरह वेदना की अधिकता, ६. कमज़ोरी, ७. मस्त हाथी ।

श्लोक -३

आँखों में सैले-अश्क[1] को रोके किसी तरह
अब्रे-जुनूंफ़ज़ा[2] के मुकाबिल खड़ा हुआ
वह बन्दा-ए-कुबेर[3] वह फ़ुरक़त नसीब यक्ष
बादल को देख-देख के यूँ सोचता रहा
देखें इसे तो अहले-ख़िरद[4] भी मचल उठें
फ़िर हम से अहले-इश्को-जुनूं की है बात क्या ।

श्लोक-४

पहले ही दिन अषाढ़ के जब छा गई घटा
सोया हुआ जो प्यार का जज़्बा था जाग उठा
बीवी के पास भेजना चाहा पयाम-ए-ख़ैर[5]
खुश-आमदेद[6] अब्र[7] को उस यक्ष ने कहा
कुछ फूल पेशकश के लिए ज़मअ कर लिए
इक अजनबी को इस तरह अपना बना लिया ।

---

१. आँसुओं का सैलाब, २. पागलपन को उत्तेजित करने वाला मेघ, ३.कुबेर का अनुचर, ४. स्वस्थ चित्त वाले बुद्धिमान व्यक्ति, ५. कुशल समाचार, ६. स्वागतम् ७.बादल, ८. बादल, मेघ ।

श्लोक-५

बादल कहाँ, कहाँ वह मुहब्बत भरा पयाम[१]
हरचंद[२] आ गया था लबे-यक्ष पर सवाल
सच है ग़मे-फ़िराक़[३] में रहता नहीं ज़रा
इन्सां को जानदार का बेजान का ख़्याल ।

श्लोक-६

करता हुआ वह अब्र की अज़मत का एतराफ़[४]
इज्ज़ो- नियाज़ो-शौक से यूँ लब-कुशा[५] हुआ
आवर्तकों के पुश्करों[६] के ख़ानदान से
तू फ़र्दे-खास इन्द्र का है मुझको है पता
तेरा मुकाम अर्श[७] है और मेरा फ़र्श[८] है
ऊँचा है दोस्त मुझसे कहीं मर्तबा तेरा
हर हाल मुझपे बारिशे- रहमत[९] करेगा तू
यह सोच कर हूँ ज़हमते-अलताफ़[१०] दे रहा
आला से इल्तजा कोई पूरी न हो भले
करनी पड़े न अर्ज़ मगर नीच शख़्स से

१.संदेश, २. फिर भी, ३.विरह वेदना, ४.स्वीकार, ५.बोला, ६. महामेघ जो प्रलय में बरसते हैं, ७. आसमान,८. ज़मीन, ९. कृपा वृष्टि, १०. प्रेम निर्वाह का कष्ट

श्लोक-७

ऐ अब्र ! तू ही तपते दिलों का करार है
मेरा पयाम, मेरी हबीबा को जा के दे
यक्षों के शहर अलकापुरी में तू जाएगा
जिसके महल कि चाँदनी में हैं धुले हुए

श्लोक -८

परदेस को गये हुए बालम घर आएंगे
छूटेंगी उनकी बीवियाँ रंजे-फिराक से
करने को तेरा शुक्रिया देखेंगी तेरी सिम्त[1]
रुख़ से हटा के ज़ुल्फ़ें बड़े इश्तियाक[2] से
बीवी को याद वह न करे तुझ को देख कर
मजबूर हो जो मेरी तरह इत्तफ़ाक़ से

---

१. ओर, २. उत्सुकतापूर्वक।

श्लोक-९

बेरोक-टोक जाके तू भाभी के पास अब्र
देखेगा वह है किस तरह तकलीफ़ पा रही
कितने हैं और उसकी मुसीबत के दिन अभी
होगी हिसाब-सा वह इसी का लगा रही
नाज़ुक अगरचे फूल से बढ़ कर है उसका दिल
उम्मीद के सहारे है उसको बचा रही

श्लोक-१०

दाईं तरफ़ चकोर के होंगे रसीले बोल
मंज़िल की सिम्त ले के चलेगी तुझे बयार
और बगुलियाँ जो वस्ल की लज़्ज़त[1] हैं जानती
तेरे करीब आयेंगी बाँधे हुए कतार

१. मिलन का आनन्द ।

श्लोक-११

धरती को खुम्ब छत्र से देती है जो सजा
ऐसी गरज को सुन के तेरी राजहंस भी
ले कर रसद[१] के तौर पर मुँह में कमल की नाल
चल देंगे मानसर[२] की तरफ़ तेरे साथ ही

श्लोक-१२

गर्म आँसुओं से करता है इज़हार प्यार का
तुझसे हबीबे-जां[३] को जो नज़दीक देख के
जिस पर कि नक्श राम के कदमों के हैं निशां
अब उस पहाड़ से तू इजाज़त सफ़र की ले

श्लोक-१३

पहले तो मुझसे रास्ते के सुन निशान तू
जिन से गुज़र के जाना है तुझको अज़ीज़े-जां[४]
फिर उसके बाद सुन मेरा पैग़ाम प्यार का
जिसमें भरा हुआ है मेरा जज़्बा-ए-निहां[५]

---

१. सफ़र के लिए खाद्य सामग्री; २. झील मानसरोवर, ३. प्रिय, ४. प्रिय, ५.हृदयगत गुप्त भाव ।

श्लोक-१४

हैरत के साथ तेरी तरफ़ देखती हुई
सिद्धों की भोली औरतें सोचेंगी इस तरह
मस्ती में तुझको भी न वो पहचान पायेंगी
चोटी पहाड़ की हो उड़ी जाए जिस तरह
तू दिग्गजों के वार बचाता हुआ मगर
उत्तर की ओर उढ़ता चला जाना अर्श पर

श्लोक-१५

बांबी से फूटता हुआ यह इन्द्र का धनक
हीरों के नूर की सी चमक है दिखा रहा
इससे चमक उठेगा तेरा सांवला बदन
जैसे कि मोरपंख मे है रूप कृष्ण का

श्लोक-१६

तुझसे ही माल-भूमि को हासिल हैं रौनकें
सब खेतियों का तेरे करम[1] पर है इनहिसार[2]
देखें न तुझको गाँव की अल्हड़ जवानियाँ
क्यों कर तशक्कुराना[3] निगाहों से बार-बार
पच्छम की ओर जाके यहाँ से मेरे नदीम[4]
उत्तर की राह जल्द ही करना तू अख़्तियार[5]

---

१. कृपा, २.निर्भरता, ३.धन्यवादी, ४.मित्र, ५. पकड़ लेना ।

श्लोक-१७

कमतर[1] भी कोई दोस्त की आमद पे ज़ीनहार[2]
खुश आमदीद कहने से मुँह मोड़ता नहीं
रिश्ता मुहब्बतों का जो होता है दरमियाँ
हरगिज़ वह बेरुख़ी से उसे तोड़ता नहीं
जंगल की आग तू ही बुझाता है इसलिए
चोटी पे अपनी तुझको बिठाएगा आम्रकूट
वह तो है एक कोहे-बुलंदो-फ़लक मुकाम[3]
धब्बा वकार पर न लगाएगा आम्रकूट

श्लोक-१७-क

इक सिलसिला-सा आम के बाग़ों का है यहाँ
जिन के फलों के पकने से छाती हैं ज़र्दियाँ
जिस वक्त उस पहाड़ के ऊपर चढ़ेगा तू
देखेंगी उसको दूर से देवों की जोड़ियाँ
ऐसा दिखाई देगा वह कोहे-हसीं[4] उन्हें
उभरा हुआ सा जैसे कि कुच[5] हो ज़मीन का
चारों तरफ़ तो ज़र्द सा आता हो वह नज़र
लेकिन हो दरमियान से कुछ-कुछ सियाह[6] सा

---

१. छोटा व्यक्ति, २. हरगिज़, ३. ऊंचा गगन को छूने वाला पर्वत,
४. सुंदर पर्वत, ५. स्तन, ६. काला ।

श्लोक-१८

रस्ते की मुश्किलों से थके मांदे देख कर
सर पर तुझे बिठाएगा वह कोहे-दिलनवाज़[१]
उसकी तपिश बुझा के दे तस्कीन[२] तू उसे
यह इक्तज़ाए-फ़र्ज़[३] है अब्रे-फ़सूं-तराज़[४]
करता है बेग़रज़ जो भलाई किसी के साथ
करता है उसके काम सब आसान कारसाज़[५]

श्लोक-१९

कुछ देर आम्रकूट पर रुकने के बाद अब्र
देखेगा चश्मे-शौक से तू नर्मदा नदी
दामन में विंध्याचल के है बिखरी हुई वह यूँ
हाथी के तन पे की गई जैसे मुसव्वरी[६]

१.आकर्षक पर्वत, २. तसल्ली, ३.फ़र्ज़ का तकाज़ा, ४.हे मुग्धकारी मेघ, ५. काम संवारने वाला ईश्वर, ६. चित्रकारी ।

श्लोक-२०

जिस आब[१] में कि हाथियों के मद की है सुगंध
औ' जामनों के झुण्ड हैं रोके हुए जिसे
पानी वह ले के ठोस कुछ ऐसा बनेगा तू
जिससे हवा का ज़ोर न तुझको हिला सके
"ख़ाली है जो हकीर[२] है" कौले-हकीम[३] है
लेकिन जो ज़र्फ़[४] पुर[५] है वह ज़र्फ़े-अज़ीम[६] है

श्लोक-२१

गुंचों को कदलियों के चबा कर हसीं हिरन
आलम[७] कदम का देख के भँवरे सियाहफ़ाम[८]
धरती की बू को सूंघ के हाथी हृष्टपुष्ट
तेरे लिए करेंगे वहाँ रहनुमा का काम

---

१. पानी २.तुच्छ ३. विद्वान का कथन ४. पात्र ५. भरा हुआ
६. महान पात्र ७.अवस्था, स्थिति ८. काले ९. मार्गदर्शक

श्लोक-२१-क

बगुलों के, चातकों के, नज़ारों में मस्त-सी
वो भोली भाली औरतें सिद्धों की ऐ सुहाब[1]
तेरी गरज को सुनते ही यकलख़्त चौंक कर
लिपटेंगी अपने-अपने हबीबों से बेहिजाब[2]
पाकर यह लुत्फ़े-वस्ल[3] सराहेंगे सिद्ध लोग
जी और जान से तुझे चाहेंगे सिद्ध लोग

श्लोक-२२

जल्दी से जाते-जाते भी तुझको मेरे अज़ीज़
कुछ देर लग ही जाएगी गुलपोशकोह[४] पर
आँसू भरे नयन से रसीली सदाओं से
होंगे निसार[५] मोर भी तेरे शिकोह[६] पर
मेरा ख्याल है कि न उलझेगा तू वहाँ
मंज़िल की सिम्त अपनी रहेगा रवाँ-दवाँ

१.मेघ, २. निःसंकोच, ३.मिलन का आनन्द,
४. फूलों से ढका पहाड़, ५. निछावर, ६. ठाठ, शान ।

श्लोक-२३

जाएगा सरज़मीने-दशारन पे जब भी तू
हर एक गुलसितां में खिलाएगा केतकी
पेड़ों की टहनियों पे जहाँ ख़ुशनुमा-परिंद[१]
तामीर आशियाने करेंगे ख़ुशी ख़ुशी
फ़र्ते-समर[२] की वजह से होंगे मेरे नदीम[३]
जामन के जंगलों के किनारे सियाहफ़ाम[४]
रहते हैं झील मानसरोवर पे जा के हंस
बारिश की रुत में इस जगह करते नहीं कयाम[५]

श्लोक-२४

विदिशा की राजधानी में पहुंचेगा इसके बाद
सामां तमाम ऐश के हासिल करेगा तू
ऐसा नज़रफ़रेब[६] नज़ारा दिखायेगा
जब बेतवा[७] की लहरों की जानिब झुकेगा तू
जैसे किसी हसीना की पुर-अज़शिकन जबीं[८]
झुक कर हो चूमता कोई अहले-हवस[९] कहीं

१.सुंदर पक्षी २. फलों की अधिकता ३. साथी ४. गहरे काले
५. नहीं रुकते ६. दृगमोहक ७. एक नदी ८.बल पड़ा हुआ माथा
९. कामातुर व्यक्ति

श्लोक-२५

खिलने लगेंगे फूल कदम के कुछ इस तरह
नीचै पहाड़ पर तेरी आमद पे जाने-जां !
आमद पे दिलसितां की फ़र्ते-जोशे-शौक़[1] से
हो जाए सीधा जैसे बदन का रूआं-रूआं
होगा नज़र फ़रेब नज़ारा कुछ इस कदर
बस तू ठगा-ठगा सा ही रह जाएगा वहां
अशिया-ए-इत्रबेज़[2] जिन्हें साहिबाने-शौक[3]
लाते हैं अपने काम में रंग रेलियों के वक्त
जाते हैं उनको छोड़ के बिखरा इधर उधर
तनहा गुफाओं में इसी पर्वत की जाते वक्त
हो जाएगा तुझे वहां अंदाज़ा जल्द ही
बिखरी हुई इन्हीं सभी चीज़ों को देख के
शहरी यहां के किस कदर आज़ादियों के साथ
लेते हैं अपने अहदे-जवानी[4] के सब मज़े

---

१. अत्यधिक कामातुरता २. सुरभित पदार्थ ३.प्रेमी जन
४. युवावस्था

श्लोक-२६

रुक कर यहाँ तकान मिटाएगा राह की
नद्दी के साथ-साथ फिर आगे बढ़ेगा तू
जूही के फूल अपनी फुवारों से सींच कर
बाग़ों की रौनकों को दोबाला करेगा तू
फूलों सी प्यारी नाज़नीन[1] मालिनों को भी
फूलों को तोड़ते हुए देखेगा तू वहाँ
चेहरों को उनके धूप से जिसदम[2] बचाएगा
देखेगा उनके रूप की छवियाँ निरालियाँ

श्लोक-२७

उत्तर की ओर जाते हुए रास्ता तेरा
टेढ़ा तो कुछ ज़रूर पड़ेगा अज़ीज़े-जां !
उज्जैन की इमारतों की शान देखकर
तुझको मिलेंगे राहतो-आराम बेगुमां[3]
और उनमें रहने वालों के अंदाज़ों नाज़ को
अपनी निगाहे-शौक[4] से देखे न तू अगर
रखेगा अपने आप को महरूमे-लुत्फ़े-ख़ास[5]
मुझको भी रंज पहुंचेगा तेरे नसीब पर

---

१. कोमलांगिनी २. जिस समय ३. निश्चय ही ४. उत्सुकता भरी दृष्टि, ५.विशिष्ट आनन्द से वंचित ।

श्लोक-२८

आएगी तेरी राह में निर्विन्धया नदी
जिसकी कि मौज-मौज[1] होगी इज़्तराब-खेज़[2]
अंगड़ाई ऐसे ले रही होगी लहर-लहर
जैसे कि नाज़नीन हो कोई शबाबखेज़[3]
नज़्ज़ारा देखकर यह तुझे लुत्फ़ आएगा
जिस वक्त जा के ठहरेगा लहरों के सामने
ऐसी ही तो अदाएं दिखाती हैं गुलबदन
हंगामे-वस्ल अपने हबीबों के सामने

श्लोक-२९

पहुंचेगा इसके पार तू ऐ मेघ जिस समय
सिंधू नदी मिलेगी तुझे सूखती हुई
विरहिन की बेनी की तरह होगी बस उसकी धार
देखी न तुझसे जाएगी उसकी यह लाग़िरी[4]
ऐसी दिखाई देगी वह प्यासी नदी तुझे
दम तोड़ सी रही हो जैसे इंतज़ार में
बारिश से अपने प्यार की उसको नवाज़ना[5]
जिससे मिले करार[6] उसे इज़्तरार[7] में

१.लहर लहर २.बेचैन ३.यौवन भरी ४. कृशता ५.अनुग्रहीत करना
६.चैन ७. बेचैनी

श्लोक-३०

जाकर अवन्ती देश की धरती पे अब्रेतर!
देखेगा उसके बूढ़े बजुर्गों का तू कमाल
किस्से उदयनराज के करते हैं वो बयां
जिसके कि ठाठ बाठ की मिलती नहीं मिसाल
जाना है फिर विशालापुरी की तरफ तुझे
जिसकी कि शानो-शौकतो-रौनक को देखकर
लगता है ऐसा देखने वाली हर आँख को
जन्नत हो जैसे खुद उतर आई ज़मीन पर

श्लोक-३१

जाती है सारसों की सदा[१] दूर दूर तक
सुबह सवेरे ठंडी हवाओं के संग जहां
देती हैं इक सरूर[२]-सा दिल और जान को
शिप्रा नदी से आई हवाओं की लहरियाँ
करती हैं वक्ते-वस्ल[३] की सारी तकान दूर
दे कर सुकून[४] सूरते-गुफ़तारे-दिलसितां[५]

---

१. आवाज़ २.मस्ती ३. संयोग-समय ४. चैन
५. प्रियतम के मधुर वचनों की तरह

श्लोक-३२

वासवदता, प्रद्यूत की बेटी को वत्सराज
उज्जैन के नगर से उठा कर था ले गया
इक बन सुनहले ताल के पेड़ों का था वहां
राजा प्रद्यूत राज की जो मलकियत रहा
कहते हैं नलगिरि कोई हाथी इसी जगह
मद के सबब उखाड़ के खम्बे फिरा किया
ऐसी कहानियां जिन्हें मालूम हैं वो लोग
करते मुसाफ़िरों का हैं मसरूर[1] दिल सदा

श्लोक-३३

बिक्री के वास्ते यहाँ सजते हैं हाट पर
रत्नों से, मोतियों से जड़े हार कीमती
शंखों के, सीपियों के, मणि मर्कतों के ढेर
मूंगों के रेज़े देख के कहते हैं सब यही
ऐसी कोई भी चीज़ समंदर में अब कहाँ
उसमें तो रह गया है फ़कत आबे-बेकरां[2]

---

१. प्रसन्न, आनन्दित २. अथाह जल

श्लोक-३४

जिस धूप से कि बालों में रचती हैं खुशबुएं
उस धूप से निकलता हुआ धुआँ जज़्ब कर
हो जाएगा मज़ीद[1] घना और ठोसतर
नाचेंगे मोर छाया हुआ तुझको देखकर
रहते हैं जिनमें नक्श हसीनों के पाँवों के
रहती हैं जिनमें फूलों की खुशबूएं सरबसर
अच्छी तरह थकान मिटाएगा जाके तू
ऐसे नज़र-नवाज़[2] घरों के करीबतर

श्लोक-३५

पाया है नीलकंठ की मानिंद नीलगूं[3]
तूने भी रंग रूप निहायत पुरसूंकुनां[4]
जाते ही शम्भू नाथ के मंदिर में इसलिए
देखेंगे तुझको शौको-अकीदत[5] से गण वहाँ
मंदिर के इर्द-गिर्द है इक दिलरुबा चमन
जिसका नज़ारा अस्ल में है रूकशे-जिनां[6]
बहती है इसके पहलू में ही गंधवत नदी
पानी को जिसके छू के है आती इधर हवा
करती है इसमें गुस्ल[7] गुलंदाम[8] औरतें
जिसके सबब है पानी नदी का महक उठा
नीले कंवल के फूल खिल उठते हैं बेशुमार
जिससे हवा में भरती है इक बू-ए-खुशगवार[9]

---

१. अधिक, २. दृगमोहक, ३. नीले रंग का, ४. जादू करने वाला
५. प्रेम व श्रद्धा, ६. स्वर्ग सम, ७. स्नान, ८. सुमनांगी, ९.सुहावनी सुगंध

श्लोक-३६

ऐ मेघ ! शाम होने से पहले किसी समय
पहुँचे उजैन के तू महाकाल पर अगर
पच्छम में सूर्य-अस्त हो जाने के वक्त तक
अच्छा है तू रुका रहे उस ही मुकाम[1] पर
संध्या को शिवोपासना होने के वक्त दोस्त !
देगा जो एक अच्छे नगाड़े का काम तू
जल्दी ही नेक काम का, पाएगा नेक फल
रौशन करेगा अपना ज़माने में नाम तू

श्लोक-३७

मस्ती के साथ नाचते-गाते बवक्ते-शाम
देखेगा शोख़ ज़ुहरा-जबीनो को तू वहाँ
पाएगा फ़न्ने-रक्स[3] में उनको तू बेमिसाल
अपनी अदा-अदा से गिराएंगी बिजलियाँ
उट्ठेंगे उनके पाँव तो उट्ठेगा हश्र[4] सा
बजने से मेखलाओं के बँध जाएगा समां
होंगी चँवर झुलाने के कारण थकी-थकी
यकलख़्त बूंदें पड़ते ही रह जाएंगी ठगी

---

१. स्थान, २. सुंदरियों, ३. नृत्य कला, ४. कयामत ।

श्लोक-३८

छिड़ने पे रुद्रदेव का ताण्डव वहाँ नदीम
रंगे-शफ़क[१] की सुर्ख़ियाँ धारण करेगा तू
शिवजी के बाज़ुओं-से जो होंगे वहाँ दरख़्त
चारों तरफ़ से उनको अहाते में लेगा तू
देखेगी जब उमा तेरी जानिब ख़ुशी-ख़ुशी
अपने करम[२] की तुझ पे लगा देगी वह झड़ी
हाथी की खाल ओढ़ने की आरज़ू जो है
दिल में उमापति के वह पूरी करेगा तू
आप अपनी ख़िदमतें उन्हें सौंपेगा जिस घड़ी
लाइन्तहा[३] सवाब[४] के लायक बनेगा तू

श्लोक-३९

राहे-दरे-हबीब[५] जब पाएं न माहरू[६]
उस वक्त अपनी शम्मे-तजल्ली[७] जलाना तू
ऐसे चमक उठे तेरी बिजली कि जिस तरह
सोने की हो लकीर कसौटी पे खिंच गयी
लेकिन जरूरी है कि तुझे ध्यान यह रहे
अपनी गरज़ से उनको डराए न तू कभी

१.पश्चिमी क्षितिज, २. कृपा, ३. असीम, ४. पुण्य, ५. प्रियतम के घर की राह, ६. चंद्रमुखी, ७. बिजली रूपी दीपक ।

श्लोक-४०

सब लोग जिनको मानते हैं अम्न का निशां
सोहबत में उन कबूतरों की शब[१] गुज़ारना
जिस छत पे सो रहे हों कबूतर वो चैन से
उस छत पे रास्ते की थकावट उतारना
होती है जिसको मंज़िले-मकसूद की लगन
बेफ़िक्र होके चैन से है बैठता कहाँ
चलता है जो भी दोस्त की इमदाद के लिए
बढ़ता है वह तो जानिबे-मंज़िल रवां-दवां

श्लोक-४१

वक्ते-तुलुए-मिह्र[२] वहाँ आशिकाने-ज़ार[३]
पोंछेंगे अश्क अपनी हबीबाओं के सुहाब[४] !
हाइल न होना रास्ते में आफ़ताब[५] के
आँसू कंवल की बेल के पोंछेगा आफ़ताब
दस्ते-शुआ-ए-मिह्र[६] को रोकेगा तू अगर
मुमकिन है उसका तुझको उठाना पड़े इताब[७]

श्लोक-४२

आईनावार[८] साफ़ गँभीरा के आब में
उतरेगी तेरी रूहे-मुसफ़्फ़ा[९] कुछ इस तरह
उतरे किसी हसीना के शफ़्फ़ाफ़[१०] कल्ब[११] में
अक्से-रुख़े-हबीबे-दिल अफ़रोज़[१२] जिस तरह

१.रात, २.सूर्योदय के समय, ३.प्रेमीजन, ४.मेघ, ५.सूर्य, ६. सूर्य के किरण रूपी हाथ, ७. कोप, ८. दर्पण के समान, ९. निर्मल आत्मा, १०. साफ़, ११. दिल, १२. मनोमुग्धकारी प्रियतम के मुख का प्रतिबिम्ब ।

श्लोक-४३

जिस वक्त जज़्ब आबे-गँभीरा करेगा तू
घट कर बहेगा हट के किनारों से इस तरह
कूल्हों से कुछ खिसक के हो नीचे बवक्ते-वस्ल[१]
आँचल किसी की रेशमी साड़ी का जिस तरह
छूती है शाख़े-बेद कुछ इस तरह सतहे-आब
हाथों से जैसे छूटता दामन पकड़ लिया
मुमकिन नहीं कि ज़ब्त से ऐसे में काम ले
झुकते बनेगी तुझको भी ऐ मेघ देखना
आगे कदम बढ़ाए न तुझसे बढ़ेगा दोस्त !
रह जाएगा पिघल के तेरा दिल भी प्यार से
नंगे बदन को देख के दिल हारते हैं जो
ऐसे में लुत्फ़ लेने से वो कब हैं चूकते

श्लोक-४४

बारिश से तेरे प्यार की होगी ज़मीं निहाल
उठने लगेगी सोंधी महक सी ज़मीन से
लम्बे सफ़ेद दाँतों वाले हाथियों के झुण्ड
ऊपर को मुँह किए हुए होंगे चिंघाड़ते
पीते हुए मिलेंगे वो सूंडों से आबे-सर्द
और घूमते इधर-उधर आएंगे वो नज़र
गूलर के फल भी पक रहे होंगे वनों के बीच
होने लगेगा तेरी नवाज़िश का जब असर

---

१. संयोग-समय ।

श्लोक-४५

रहते हैं कोहे-देवगिरि पर ही कार्तिक
देना है जिनको ग़ुस्ल गुलों से वहाँ तुझे
ये गुल जुटाने के लिए चिंता न कर ज़रा
ला देगी फूल काहकशां[1] बेगुमां तुझे
अफ़ज़ल[2] हैं देवताओं में रखना यह तू ख़याल
अग्नि ने इन्द्र-दल की हिफ़ाज़त के वास्ते
पैदा किया उन्हें श्री शिवजी के अंश से
इस वास्ते है कार्तिक का तेज इतना तेज़
इतनी नहीं मजाल कि सूरज भी सह सके

श्लोक-४६

पहुँचे जो उस पहाड़ पे तू घन गरज लिए
तेरी गरज से गूंज उट्ठें उसकी घाटियाँ
वह मोर जो अज़ीज़ मुनिकार्तिक का है
नाच उट्ठे झनझनाता हुआ घुंघरू वहाँ
शिव की शिखा के चाँद की तनवीर[3] के सबब
रहती हैं ताबनाक सदा जिसकी अँखड़ियाँ
चुन-चुन के जिसके पंख कंवल फूल की जगह
कानों में खोंसती है बड़े शौक से उमां

१.आकाश गंगा, २. श्रेष्ठ, प्रमुख, ३. रोशनी ।

श्लोक-४७

कुछ देर उनके दर्शनों का लाभ ले के तू
होगा जब अपनी मंज़िले-मकसूद को रवाँ
सिद्ध अपनी बीवियों को लिए अपने साथ-साथ
आएंगे घूमते हुए तुझको नज़र वहाँ
गाते बजाते झूमते मदमस्तियों के साथ
तुझको मिलेंगे हाथों में वीणा लिए हुये
देखेंगे तुझको राह से हट जाएंगे तेरी
वीणा को भीगने से बचाने के वास्ते

श्लोक-४८

बहती है कुछ ही दूरी पे चर्मनवती नदी
यज्ञों की रन्तीदेव के देती है साक्षी
ऊंचे गगन से देख कर उसको ज़मीन पर
झुकना पड़ेगा तुझको भी सम्मान के लिए
ऐ साँवले सलोने जो नीचे झुकेगा तू
चर्मनवती के पानी को पीने के वास्ते
ऐसा लगेगा जैसे कोई मुक्ता हार हो
देवी वसुंधरा के गले में पड़ा हुआ
तू उसमें इन्द्रनील मणि-सा लगेगा दोस्त !
दस्ते-हुनर[१] से जैसे किसी के जड़ा हुआ

१. कला निपुण हाथ

श्लोक-४९

चर्मनवती के पार पहुंचकर तुझे नदीम
दशपुर की ओर होना है तेज़ी से गामज़न[1]
देखेंगी तेरी छब को हसीनाएँ शौक से
रौनक से अपनी उनका रिझाना है तुझको मन
डालेंगी तुझपे ऐसी निगाहें कि क्या कहूँ
शोख़ी भी उनकी दीदनी[2] होगी हया के साथ
आँखों को अपनी ऐसे नचाएँगी जिस तरह
नाचें कँवल के फूल पे भँवरे अदा के साथ

श्लोक-५०

आगे बढ़ेगा रास्ते से ब्रह्मावर्त के
पहुंचेगा धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र में शिताब[3]
जिसमें था पांडवों का ठना कौरवों से युद्ध
जिसमें बहा बहादुरों का खून मिस्ले-आब[4]
अर्जुन के तीर युद्ध में बरसे थे इस तरह
बारिश कंवल के फूल पे होती है जिस तरह

---

१. रवाना होगा २. दर्शनीय ३. शीघ्र ४. पानी की तरह

श्लोक-५१

योद्धा बड़ा था फिर भी था बलराम अम्नदोस्त[1]
वह भाइयों की जंग में शामिल नहीं हुआ
तोबा जो कर ली पीने पिलाने से एक बार
फिर मयकशी पे भूल के मायिल नहीं हुआ
देती थी गो मिला के नज़र की हलावतें
जामे-शराबे-नाब में चाहत से रेवती
भूले से भी कबूल न करता था जाम को
मय से उसे वह पहली सी रग़बत रही न थी
आबे-सरस्वती पिया उसने बजाए-मय
पीते ही जिसके उसकी थी काया पलट गयी
तू भी सरस्वती का पियेगा जो आबे-साफ़
बातिन[2] की जितनी गर्द है धुल जाएगी तेरी
ज़ाहिर में गो सियाह नज़र आएगा मगर
बातिन में होगा इस से तू आईनावार[3] साफ़
है अस्ल में सफ़ाई-ए-बातिन की अहमियत
ज़ाहिर में तो हुआ करे कोई हज़ार[4] साफ़

---

१. शांतिप्रिय २. भीतर ३. दर्पण की तरह
४. कितना ही

श्लोक-५२

जाना है तुझ को जानिबे-कनखल यहां से दोस्त!
उतरी जहाँ है जाह्नवी परबत की गोद से
राजा सगर के बेटों की सीढ़ी है स्वर्ग की
भागीरथी का नाम भी देते हैं सब इसे
झाग इसकी इसका ख़न्दा-ए-दंदांनुमा[१] है दोस्त!
जैसे कि डाह पर यह उमा की हो हँस रही
थामे हो दस्ते-मौज में शिव की जटाओं को
और कह रही हो जैसे उसे छेड़ती हुयी
तू अपने दिल में कुछ भी समझती रहे मगर
शंकर पे तुझसे बढ़के है मेरा असर सखी!

श्लोक-५३

ऐरावते-अज़ीम[२] की मानिन्द झुक के तब
तू गंगा जल को पीने में जुट जाएगा अगर
पड़ने से अक्स आइना-ए-आब[३] में तेरा
आएगा इस तरह का नज़ारा वहाँ नज़र
गंगो-जमन का मेल हो जैसे कि हो गया
संगम से पहले ही किसी दीगर मुकाम[४] पर

---

१. वह हँसी जिसमें दाँत दिखाई देते हैं २-इन्द्र का सफ़ेद हाथी, ३-जल रूपी दर्पण, ४-अन्य स्थान पर

श्लोक-५४

फिर इसके बाद कोहे-हिमाला पे जाएगा
कस्तूरियों की बास बसी जिसकी चोटियाँ
करती हैं दूर राह की सारी थकान को
राहत सी एक पाते हैं कल्बो-नज़र[1] जहाँ
उन चोटियों की बर्फ़ पे अब्रे-सियाहफ़ाम[2]!
आएगा ऐसा देखने वालों को तू नज़र
शिव के सफ़ेद बैल ने मस्ती में जिस तरह
कीचड़ बदन पे अपने मला हो उछाल कर

श्लोक-५५

जंगल की आग कोह[3] पे जिस दम भड़क उठे
जंगल के जंतुओं के लिए कष्टकर बने
खुल कर बरस के आग को यकसर बुझाए तू
लाज़िम है मेरे दोस्त ! अमल यह तेरे लिये
करता है जब्रो-जौर[4] के मारों पे वह करम[5]
आलम तमाम जिसको कि अब्रे-करम[6] कहे

---

१. दिल और नज़र २. घने काले मेघ ३. पर्वत ४. ज़ुल्मो-सितम
५. कृपा ६. कृपा वृष्टि करने वाला मेघ

श्लोक-५६

जाते ही तेरे तुझ पे हिमाला के कुछ शरभ[1]
सींगों के साथ अपने चढ़ाई करें अगर
अंगों को अपने जिस्म के तोड़ेंगे इस तरह
ऊपर उछल-उछल के गिरेंगे ज़मीन पर
अपने अमल से बाज़ न आएँ किसी तरह
ओलों की मार से उन्हें करना तू मुंतशर[2]
करता है ऐसी हरकतें नाज़ेबा[3] कोई जब
पड़ती नहीं है चोट कब उसके वक़ार[4] पर

श्लोक-५७

कोहे हिमालया पे ही आएगा इक जगह
शिवजी का नक्शे-पाए-मुकद्दस[5] तुझे नज़र
जिसको कि पूजते हैं अकीदत से सिद्ध लोग
पंचामृत का अर्ध्य चढ़ाते हैं नक्श पर
इस शिव-शिला का करते हैं श्रद्धा से जो तवाफ़[6]
मिलता है इसके फ़ैज़[7] से उनको बड़ा सवाब[8]

---

१. हिरन के सदृश एक पर्वतीय पशु २. तितर बितर ३. अनुचित अशोभनीय
४. प्रतिष्ठा ५. पवित्र चरण चिन्ह ६. परिक्रमा
७. कृपा ८. पुण्य

श्लोक–५८

चलती है उसके बांस के जंगल में जब हवा
हर ओर गूंज उठती हैं जैसे कि बंसियाँ
उनके सुरों में अपने सुरों को मिलाके तब
गाती हैं गीत प्यार के श्रद्धा से किन्नरियाँ
पाई त्रिपुर पे रुद्र महादेव ने विजय
गाती उसी के गीत हैं वो झूम झूम के
तेरी गरज के मिलने से जुट जाएंगे वहाँ
सामां तमाम रुद्र के संगीत के लिए

श्लोक–५९

नज़्ज़ारे आसपास के सब देखते हुए
जाना है तुझको रास्ते से क्रौंच रंध्र के
जिससे गुज़र के मानसरोवर को ऐ नदीम!
जाते हैं बर्शगाल[१] में हंसों के काफ़िले
तीर–अफ़गनी[२] का अपनी था सिक्का जमा दिया
जिसको कि परशुराम ने तीरों से छेद के
बामन के छोटे पाँव सा खुद को समेट कर
गुज़रेगा जैसे गुज़रे कोई लेट लेट कर

---

१. वर्षाकाल २. बाण चलाने में निपुणता

श्लोक-६०

उत्तर की ओर बढ़ के ज़रा इस मुकाम से
कैलाश कोह का तुझे बनना है मेहमां
जिसकी कि चोटियों को हिलाकर था रख
दिया
रावण ने ज़ोरे-बाज़ू से अपने गुहर-फ़िशां[1]!
यह कोहे-आबदार[2] है बेहद सफ़ेदो-साफ़
बेमिस्ल[3] आईना है यह देवांगनाओं का
बर्फ़ इसकी इस तरह से चमकती है जिस तरह
जम सा गया हो इक जगह शिवजी का कहकहा

श्लोक-६१

आँखों में सब की क्यों न समाएगा तू भला
सुरमे की तरह चिकना भी है तू सियाह भी
जैसे हो एक ताजा़ तराशीदा[4] हाथी दांत
ऐसी अनोखी शान है कैलाश कोह की
उजले सफ़ेद बर्फ़ ढके कोह पर सुहाब!
तू यूं लगेगा देखने वाली निगाह को
जैसे अजीब शान से सजधज दिखा रहा
हलधर के गोरे जिस्म पे काला लिबास हो

---

१. मोती बरसाने वाला २. चमकता हुआ पहाड़ ३. अद्‍भुत, अद्वितीय ४. तराशा हुआ

श्लोक-६२

शिव जी का हाथ प्यार से थामे हुए उमा
जिस वक्त सैरे-कोह को निकले इधर उधर
सीढ़ी का काम देना ढलानों पे कोह की
अपने बदन को शक्ल में ज़ीने की ढाल कर

श्लोक-६३

बूंदों को अपनी बर्फ़ की सूरत जमा के तू
जिस वक्त अपने आपको कर लेगा सख़्ततर
फ़व्वारा सा बनाएंगी देवांगनाएं तब
कंगन चुभो चुभो के तेरा जिस्म छेद कर
ठंडक सी पाके गर्मी में तेरी फुआर से
छोड़ें किसी तरह तेरा पीछा न वो अगर
अपनी गरज से ऐसा दिखाना जलाल तू
रह जाएँ जिससे सहम के वो शोख़ सीमबर[1]

---

१. चांदी जैसे उजले शरीर वाली

श्लोक-६४

पीना तू झील मानसरोवर का आबे-साफ़
जिसमें सुहाने सोन कमल हों खिले हुए
छाना तू एक पर्दा-ए-आबी की शक्ल में
ऐरावते-अज़ीम का मुंह ढांपते हुए
पानी को सोखते हुए अपने बदन में तू
कल्पतरु की कोंपलों को छेड़ते हुए
लेना नज़र फ़रेब नज़ारों का लुत्फ़ तू
कैलाश पर इधर से उधर घूमते हुए

श्लोक-६५

अलकापुरी है गोद में पर्वत की इस तरह
जैसे कोई हसीना दर-आग़ोशे-दिलरुबा
गंगा वहाँ उतरती है इस आनबान से
आंचल किसी हसीना का हो ज्यों ढलक रहा
ऐसी हमारी अलकापुरी को मेरे अज़ीज़ !
पहचानना तेरे लिए मुश्किल नहीं जरा
कुछ इस तरह से सर पे वह तुझको उठाएगी
बालों में जैसे मोती की लड़ियाँ सजाएगी ।

उत्तर मेघ
(भाग-दो)

श्लोक-१

अलकापुरी में होंगी जो ऊँची इमारतें
ऐ अब्र ! तेरे साथ है उनका मुकाबला
चंचल चमकती बिजलियाँ रहती हैं तुझमें गर
तो उनमें रहने वालों का है हुस्न चाँद सा
शोभा है तेरी इन्द्रधनुष के सबब अगर
तो उन घरों की शान है तस्वीरें ख़ूबतर [१]
तेरे यहाँ गरज की सदाएं हैं ज़ोरदार
मिरदंग की है उन में भी आवाज़ पुरअसर
बूंदें तेरी हैं मोतियों की तरह आबदार
रखते हैं उनके फ़र्श भी हीरों की आबो-ताब[२]
उड़ता है तू गगन में तो छूते हैं वो गगन
तुझ से किसी भी तौर नहीं हैं वो कम सुहाब[३]

---

१. सुन्दरतर, २. चमक-दमक, ३. मेघ

श्लोक-२

अलकापुरी की औरतों की शान क्या कहूँ
हाथों में होंगी फूल कंवल के लिए हुए
चेहरों पे ग़ाज़ा[1] कोध्र का होगा मला हुआ
और गेसुओं[2] में फूल कुमुद के सजे हुए
जूड़ों में होंगे उनके सजे कुर्बकों के फूल
कानों में फूल झूलते होंगे शिरीश के
और नीप पुष्प खिलते हैं बरसात में ही जो
मांगों में उनकी हुस्न को होंगे बढ़ा रहे

श्लोक-३

फूलों से पेड़ रहते हैं हरदम सजे हुए
भंवरों की उन पे रहती है गुंजार हर घड़ी
बेलें कंवल की रहती हैं फूलों भरी सदा
हंसों की जिनके गिर्द कि रहती है डार सी
गरदन उठा-उठा के मचाते हैं शोर मोर
रातों को शिव के चांद की होती है चांदनी
चलता नहीं है कुछ भी यहां ज़ुलमतों[3] का ज़ोर
सहमी हुई सी रहती है इक सिम्त तीरगी[4]

---

१. पाउडर २.केशों ३. अँधेरों ४. अंधकार

श्लोक-४

दीदारे-यार के बिना होता जो कम नहीं
उसके सिवाए कोई भी यक्षों को ग़म नहीं
होते नहीं किसी भी सबब से वो अश्कबार
होती सिवा ख़ुशी के कभी आँख नम नहीं
आपस में रूठते भी हैं मनते भी हैं हबीब
होती है उनमें प्यार भरी नोंक-झोंक भी
पीरी[1] का उनके ज़िह्न में आता नहीं ख़याल
रहते हैं सारी उम्र वो मस्ते-शबाब ही

श्लोक-५

अलकापुरी के ऊंच-ऊँचे इन घरों में ही
रहते हैं यक्ष हो के ग़रीके-शबाबो-मै[2]
इन को किसी भी चीज़ की रहती नहीं कमी
ख़ुद ही जुटाता कल्पवृक्ष है हर एक शै[3]

---

१. वृद्धावस्था २. यौवन एवं मदिरा में निमग्न ३. वस्तु, पदार्थ

श्लोक-६

बहती हैं पाक-साफ़ हवाएँ यहाँ सदा
गंगा के आबे-सर्द की ख़ुनकी[१] लिए हुए
गंगा किनारे पर जो हैं ये पेड़ छायादार
राहतकदे[२] हैं माहजबीनों के वास्ते
हाथों में उनकी जैसे है जादू भरा हुआ
मुट्ठी में उनकी रेत भी आए गुहर[३] बने
और उनकी सोहबतों[४] को तरसते हैं देवता
दिल से जो हैं फ़रेफ़्ता[५] हुस्नो-जमाल[६] के

श्लोक-७

उनके हबीब छेड़ छेड़ में बवक्ते-वस्ल[७]
बन्दे-कबा[८] को खोल ही देते हैं बरमला[९]
कपड़ा जब उनके तन से हटाते हैं शौक़ से
बेपर्दा पा के ख़ुद को लजाती हैं महलक़ा[१०]
छुपने को ओट जब कोई मिलती नहीं उन्हें
ग़ाज़े की मुट्ठियाँ हैं उड़ातीं वो गुलबदन
हीरों की रोशनी नहीं बुझती बुझाए से
ऐसे में उनके व्यर्थ ही जाते हैं सब जतन

---

१. ठंडक २. विश्रामस्थल ३. मोती ४. मिलन ५. मुग्ध ६. रूप सौंदर्य ७. मिलन समय ८. वस्त्रों के बंधन ९. निःसंकोच १०. चंद्रवदनी

श्लोक-८

अब उड़ते-उड़ते ऊंचे मकानों में जा के तू
देखेगा उनमें सज रही तस्वीरें ख़ुशनुमा
कर देगा उनको अपनी फुआरों से तू ख़राब
आएगा उनपे रहम न ज़ालिम तुझे ज़रा
करता है जो भी ऐसी शरारत का काम जब
रहता नहीं है उसमें फिर रुकने का हौसला
सब की नज़र बचा के निकल भागता है वह
साबित न जिससे उसकी किसी तौर हो ख़ता
तू भी तो अपना रूप बदलने में है चतुर
धुएँ का रूप धार के खिड़की से भागना

श्लोक-९

हट जाए तेरा पर्दा-ए-आबी[१] जो रात को
नीले गगन के तारे दिखाते हैं आबो-ताब
उस वक्त बर्फ़ पोश इस कोहे-बुलंद पर
रौनक रिदाए-बर्फ़[२] की होती है लाजवाब
कानों में अब वहाँ की हसीनाओं के नदीम!
देखेगा चंद्र हीरों की तू ताबनाकियां[३]
जिनसे कि चांदनी में टपकती है रोशनी
कर सकता जिनकी दिलकशी को मैं नहीं बयां
रह कर बँधी भुजाओं के बंधन में देर तक
होती हैं थक के चूर निगाराने-सीमतन[४]
पड़ते ही उनके जिस्म पे ठंडी फुआर अब्र!
सब मेहनते-विसाल की मिट जाएगी थकन

---

१. जलीय आवरण २. बर्फ़ की चादर ३. चमक दमक
४. चांदी के से बदन वाली सुंदरियां

श्लोक-१०

साथ अपने अपनी-अपनी हबीबाओं को लिए
अलकापुरी के ऐश तलब लोग ऐ सुहाब !
बुस्ताने-वैभराज[1] में लेते हैं सब मज़े
करते हुए कुबेर की तारीफ़ें बेहिसाब

श्लोक-११

दिन को तो अपने घर में ही रहती हैं वो मगर
ढाती हैं हश्र वक्त जब आता है रात का
मिलने को अपने-अपने हबीबों से उनके घर
जाती हैं बन सँवर के अरूसाने-महलक़ा[2]
कानों में, काकुलों में सजाती हैं वो जो फूल
गिर-गिर के रहगुज़र में बिखरते हैं जाबजा
जिससे गुज़र के खेल हैं चाहत का खेलतीं
उस रहगुज़र का देते हैं ये सब निशां पता
टूटे हुए वो हार और बिखरे हुए से बाल
चेहरों पे वो निशान थकावट के खौफ़ के
करते हैं सारी रात की वो दास्तां बयां
सुनने को सबके अपनी ज़बाने-ख़मोश से

---

१. वैभराज-उद्यान २. चंद्रमुखी युवतियां

श्लोक-१२

सौंदर्य-सज्जा के लिए जो कुछ भी चाहिए
करता है कल्पवृक्ष मुहय्या हर एक शै
ज़ेवर भी, गुल भी, कपड़े भी, मेंहदी भी, ग़ाज़ा भी
इन सबसे बढ़के मस्ती भरे जामहा-ए-मै[1]

श्लोक-१३

सूरज के घोड़ों से भी तीखे घोड़े हैं यहाँ
मदमस्त हाथी क्या हैं जैसे कोह हैं गिराँ[2]
हाथी सरीखे तन बदन वाले यहाँ के मर्द
लोहा जिनहोंने जंग में लंकेश से लिया
जख्मों से इनके जिस्म सजे हैं कुछ इस तरह
आभूषणों की सज्जा को भी मात कर दिया
अपने वतन को ऐसे जवानों पे नाज़ है
उनके सबब से अपना वतन सरफ़राज़[3] है

---

१. शराब के प्याले २. ऊंचे विशाल पर्वत ३. उन्नत मस्तक

श्लोक-१४

जैसे ही कामदेव पे खुलता यह राज़ है
रहते हैं इस मुकाम पर ही रुद्र शान से
लेता नहीं है भूल के भी काम कामदेव
भंवरों की डोरी वाली उस अपनी कमान से
चितवन से, अब्रुओं से हसीनाने-शोख़की
लेता है काम तीरो-कमां का बसद कमाल[1]
बनते बुरी तरह हैं निशाना हवस परस्त[2]
होता है उनपे जब भी कभी जादु-ए-जमाल[3]

श्लोक-१५

काशाना-ए-कुबेर[4] से थोड़ा शुमाल में
तू मेरे घर को देखेगा अपनत्वभाव से
आंगन में इसके पेड़ है मंदार का लगा
पाला है जिसको मेरी हबीबा ने चाव से
दरवाज़ा इस मकान का है देखने की चीज
छोटा सा इन्द्र-धनुष हो जैसे बना हुआ
इस द्वार की जो शान है क्यों कर बयां करूँ
है चित्र उस का आँखों में अब भी बसा हुआ

---

१. बड़ी निपुणता से २. कामीजन ३. रूप का जादू ४. कुबेर का घर

श्लोक-१६

इस घर में बावड़ी भी बड़ी दिलफ़रेब[1] है
हीरों से हैं जड़ी हुई जिसकी कि सीढ़ियां
खिलते हैं बावड़ी में सुनहरे कंवल के फूल
रखती चमक हैं हीरों जैसी जिनकी डंडियां
इसमें जो हंस रहते हैं खुश हैं वह इस कदर
हो जाएगा तू हक्का बक्का सा यह देखकर
तेरे पहुंचने पर भी वो जाना न चाहेंगे
फिर अपनी झील मानसरोवर पे अब्रेतर!

श्लोक-१७

उस बावड़ी के एक किनारे पे है बना
इन्सान का बनाया हुआ कोहे-दिलकुशा
नीलम जड़ी हैं ख़ूबसूरत उसकी चोटियां
परबत यह मेरे घर की है रौनक बढ़ा रहा
केलों की है सुनहरी सी जो बाड़ इसके गिर्द
परबत की शान को वह लगाती हैं चार चांद
हालांकि यह बनावटी परबत है ऐ सुहाब!
अस्ली पहाड़ इसके मुकाबिल मगर है मांद
बिजली से ये चमकते हुए तेरे हाशिये
याद उस पहाड़ की ही दिलाते हैं बारहा[2]
मेरी शरीके-ज़ीसत[3] को है वह बहुत अज़ीज़
उसका ख़याल मुझको भी अब है सता रहा

---

१. मनमोहक २. बार-बार ३. जीवन-संगिनी, पत्नी

श्लोक-१८

इस कोह पर अशोको-बकुल के दरख़्त भी
हैं माधवी की बेलों के कुंजों के पास ही
इन में से एक को तो है ठोकर की आरज़ू
मेरी हबीबा या तेरी भाभी के पांव की[१]
उगले दहन[२] से उसकी जड़ों में शराब कब
रहता है दूसरे को बराबर यह इंतज़ार
ऐसा करम[३] जो उनपे हो वो लहलहा उठें
आ जाए दोनों पेड़ों पे जैसे नई बहार

श्लोक-१९

चौकी है एक हीरों जड़ी उनके दरमियां
बिल्लौर की है जिसपे इक तख़्ती लगी हुई
और पंछियों के वास्ते चौकी के बीच में
पतली सी एक सोने की यष्टि[४] बनी हुई
जिस पर मेरी हबीबा के पास ऐ मेरे नदीम!
आ बैठता है शाम को इक मोर ख़ुशनुमा
वह तालियों से ताल है देती बसद ख़ुलूस
और वह भी मस्त हो के है उस धुन पे नाचता
कंगन जो तेरी भाभी के हाथों में हैं पड़े
वो भी अदाए-ख़ास से उठते हैं झनझना

---

१. मान्यता है कि जब कोई सुहागिन अशोक वृक्ष के तने को बाएं पैर की ठोकर मार दे और बकुल वृक्ष की जड़ों में शराब के कुल्ले करे तो उनमें फूल आते हैं २. मुंह ३. कृपा ४. पक्षियों का अड्डा

श्लोक-२०

पहचान लेगा ख़ाना-ए-वीरां[1] को तू मेरे
इन सब निशानियों को वहाँ देखते हुए
वह ग़मजदा मिलेगी इसी ग़मकदे[2] में दोस्त!
मैं कह रहा हूँ जिससे तुझे मिलने के लिए
बेशक ये सब निशान मिलेंगे वहां मगर
पहली सी रौनकें न वह होगा लिये हुए
बादे-ग़रूबे-आफ़ताब[3] भी भला कहीं
देखे किसी ने फूल कमल के खिले हुए
मेरे वहाँ न रहने से सूना पड़ा है वह
साकिन[4] बग़ैर मसकने-वीरां[5] बना है वह

श्लोक-२१

जाने को इस मकान के अन्दर मेरे अज़ीज़
हाथी के छोटे बच्चे का सा रूप धारना
जिस कोह को का कि ज़िक्र किया है अभी-अभी
चोटी पे उसकी अपनी थकावट उतारना
जुगनू के कौंदने की तरह बिजली की किरन
आंगन में घर के डाल के सजदा गुज़ारना

---

१. वीरान घर २. वह घर जिसमें दुःख व्याप्त हो
३. सूर्यास्त के पश्चात ४. वासी ५. उजड़ा हुआ घर

श्लोक-२२

गर्चे वह होगी बेतरह कमजोर हो चुकी
फिर भी तुझे दिखाई वह देखी नज़रफरेब
दांत उसके इस तरह हैं चमकते कि जिस तरह
इक सफ़[१] में हों चमक रहे मोती नज़रफ़रेब
होंठों पे उसके सुर्खी है बेहद सुहावनी
पतली कमर है बेद की सूरत झुकी हुई
चितवन को उसकी पाएगा भयभीत इस तरह
हिरनी की जिस तरह कि हो चितवन डरी हुई
नाभी है उसकी दरिया में विरता[२] हो जिस तरह
और जिस्म है झुका हुआ जोबन के भार से
चलने में सुस्तगाम सी दीखेगी इस तरह
महसूस होगा देख के उसका सुहाना रूप
तख़लीके-अव्वलीं[३] हो वह ख़ालिक़[४] की जिस तरह

---

१. पंक्ति २. भँवर ३. सर्वोत्तम कृति ४. स्रष्टा

श्लोक-२३

बैठी हुई मिलेगी वह ख़ामोश यूं तुझे
तनहाइयों की मारी चकोरी हो जिस तरह
हैरत से उसको देखके सोचेगा तू ज़रूर
रक्खे हुए है रूह को तन में यह किस तरह
बस उसको जानना मेरी जाने-हयात[1] तू
जो ज़िंदगी का खेल रही हो यह सख्त खेल
वह ऐसी ख़स्ता हाल तुझे आएगी नज़र
पाले से हो मरी हुई जैसे कँवल की बेल

---

१. जीवन-प्राण

श्लोक-२४

रह रह के दिल में जागती होगी विरह व्यथा
रोने से होगी आँखों पे सूजन सी आ गई
चेहरा बुझा-बुझा सा उसका आएगा नज़र
होठों पे उसके पपड़ी की इक तह सी छा गई
मुरझाया चेहरा अपनी हथेली पर धर के वह
इस वक्त होगी फ़िक्रे-मुजस्सम[1] बनी हुई
गालों पे एसे बिखरी नज़र आएँगी लटें
जैसे चमकते चांद पे बदली घिरी हुई

---

१. चिंता का मूर्त रुप

श्लोक-२५

या व्यस्त देवताओं की पूजा में होगी वह
डूबी सी या मिलेगी वह मेरे ख़याल में
मैना से मेरे बारे में या पूछती हुई
दर्द और कर्ब[1] उंडेलती अपने सवाल में
ऐ खुशनवा[2] तू उनको बहुत ही अज़ीज़ थी
आती है उनकी याद भी दिन में तेरे कभी
मुमकिन है मेरा चित्र बनाती हुई मिले
या फिर यूं ही ज़मीं पे लकीरें सी खींचती

---

१. दुःख २. मधुर स्वर वाली

श्लोक-२६

मैला लिबास गोद में वीणा लिए हुए
चाहेगी गीत प्रीत के गाना मगर सुहाब!
आँखों मे उसकी आएगा तूफ़ाने-अश्क[1] उमंड
वीण के तार भीग के हो जाएंगे ख़राब
अश्कों को पोंछ-पोंछ के गाने की कोशिशें
करती रहेगी फिर भी न होगी वह कामयाब
रह-रह के भूल जाती हुई आएगी नज़र
लय के उतार और चढ़ाव का सब हिसाब

श्लोक-२७

दुख के समय की गिनती और अनुमान के लिए
रखे थे पहले रोज़ ही दहलीज़ पर जो फूल
गिन-गिन के उनको फ़र्श पे रखती मिलेगी वह
रह रह के दिल में होती हुई बेतरह मलूल
यह जानने की कर रही होगी वह कोशिशें
कितने महीने और हैं दुख और दर्द के
या फिर वह याद करती मिलेगी मलाल से
बीते हुए दिनों में लिए वस्ल के मज़े
जिस वक्त अपने-अपने हबीबों के हिज्र[2] में
रंजो-ग़मे-फ़िराक़[3] उठाती हैं औरतें
बेचैन दिल के चैन और आराम के लिए
वक्त ऐसे मशग़लों[4] में बिताती हैं औरतें

१. अश्रुओं का तूफान २. विरह ३. विरह वेदना ४. व्यस्त रहने के उपाय

श्लोक-२८

हर वक्त काम-काज में होगी लगी हुई
दिन में इसी से उसको न फ़ुरकत[1] सताएगी
लेकिन बवक्ते-शब[2] जो न बहलेगा उसका दिल
उसको ग़मे-फ़िराक़ की शिद्दत सताएगी
लेटी हुई ज़मीन पे होगी वफ़ा परस्त[3]
करवट बदलती और कभी ऊँघती हुई
रोज़न[4] से घर में झाँक के देखेगा जब उसे
हर बात ठीक पाएगा मेरी कही हुई

श्लोक-२८क

दिन में न पाएगा तू अकेला कहीं उसे
हर वक्त साथ उसके रहेंगी सहेलियाँ
इक दूसरे के ग़म को बटाती रहेंगी वो
होती हैं औरतों में बहम[5] हममिज़ाजियाँ
जाना करीब उसके उसी वक्त ऐ नदीम !
सब सो चुके हों और जब वह जागती मिले

१.विरह २.रात के समय ३.निष्ठा मयी ४.रोशनदान ५. परस्पर

श्लोक-२९

मेरे विरह के ताप से पिघली गली हुई
होगी ज़मीं पे एक ही करवट पड़ी हुई
ऐसी लगेगी आस्मां में जैसे चांद की
पूरब की ओर एक कला हो बची हुई
बीती हुई विसाल की रातों की याद में
रो रो के होगी हिज्र की रातें गुज़ारती
कांधों पे उसके बिखरी हुई होंगी काकुलें
हाथों से होगी उनको बमुश्किल सँभालती
तुझको वह अपने हाल से बेहालो-बेख़बर
दर्दो-अलम की मारी हुई आएगी नज़र
नाख़ुन तक उंगलियों के बढ़ाए मिलेगी वह
फ़ुरकत में मेरी खोई हुई होगी इस कदर

श्लोक-३०

खिड़की की राह चांद की किरणों को देखकर
उसकी निगाह आएगी वापस बुझी हुई
ठंडक मिलेगी उनमें न पहली सी अब उसे
गर्म आंसुओं से पलकें मिलेंगी झुकी हुई
रहती है रोज़े-अब्र में जैसे कँवल की बेल
कुछ-कुछ खिली हुई सी तो कुछ अधखिली हुई
वैसे ही वह वफ़ा-ओ-मुहब्बत की मूर्ति
सोई हुई मिलेगी न कुछ जागती हुई

श्लोक-३१

अब अपनी रूप सज्जा वह करती नहीं कभी
रहती है बस फ़िराक़ की कुलफ़त[1] में मुबतला[2]
आँखों में अश्क होंगे तो होंठों पे पपड़ियाँ
दिल में यह चाह सपने में ही आ मिले पिया

श्लोक-३२

जूड़े में अब वह फूल सजाती नहीं कभी
बालों को भी कभी नहीं अपने सँवारती
उसकी इकहरी बेणी से ही जान लेगा तू
उस पर पड़ी हुई है मुसीबत फ़िराक़ की
मुद्दत मेरी सज़ा की गुज़रने के बाद जब
छूटूंगा मैं जुदाई के इस सख़्त दाम से
हाथों से अपने बाँधूंगा बेणी को उसकी मैं
बेहद खुशी से और बड़े एहतमाम[3] से
रह-रह के चिकने गालों पे वो बाल खरखरे
यूँ चुभते होंगे जिस तरह चुभते हैं तुंदख़ार[4]
इसके ख़याल ही से भर आता है दिल मेरा
होगा अब उसका हाल कुछ ऐसा जिगर-फ़िगार[5]

---

१. विरह वेदना २. फंसी हुई ३. समारोहपूर्वक ४. तीखे कांटे
५. जिगर को पिघला देने वाला

श्लोक-३३

मुश्किल से अपने दुबले बदन को सम्भालती
काबू में दिल न रहने से रो उठती बार-बार
गहनों, सजावटों से हुई बेनियाज़[१] सी
तुझको दिखाई देगी वह सरता-पा इंतज़ार[२]
रोशन-ज़मीर[३] जो हैं वह होते हैं रहम दिल
दुख उसका देख हो उठेगा तू भी बेकरार

श्लोक-३४

दिल में वह बेपनाह[४] मुहब्बत लिए हुए
मैं भी हूँ उससे मिलने की हसरत लिए हुए
ऐसी वफ़ा परस्त है मेरी शरीके-ज़ीस्त[५]
उसके तईं मैं दिल में हूं इज़्ज़त लिए हुए
बढ़-बढ़ के बोलना मिरा दीवाना पन सही
है लफ़्ज़-लफ़्ज़ मेरा हकीकत लिए हुए ।

---

१. उदासीन २. सिर से पैर तक प्रतीक्षा का रूप, ३ निर्मल आत्मा वाली ४. अथाह, असीम ५. जीवन-संगिनी

श्लोक-३५

काजल से बेनियाज़ हुई उसकी अंखड़ियाँ
उसकी भँवें भी भूल गईं सारी शोख़ियाँ
पहुंचेगा जूँही लेके तू मेरा पयामे-शौक़[१]
मुमकिन है बाईं आँख ही उसकी फड़क उठे
अच्छी ख़बर के पाने के अच्छे शगून से
मन में ख़ुशी लिए हुए शायद लहक उठे

श्लोक-३६

केले के पेड़ का तना तुझसे छुपा नहीं
है यक्षिणी के जिस्म में वैसी मुलायमत[२]
उस मरमरीं बदन का मैं कैसे बयां करूँ
बेहद मुलायमत ही है जिसकी ख़सूसियत[३]
सब याद होगा उसको कि उस सीमतन[४] को मैं
हंगामे-वस्ल[५] कैसे दबाता था शौक़ से
अहसास उसका जाग उट्ठे तुझको देख कर
मुमकिन है अंग-अंग ही उसका फड़क उठे

---

१. प्रणय संदेश, २. मसृणता, ३. विशेषता, ४. चांदी के बदन वाली, ५. मिलन के समय।

श्लोक-३७

वह मेरे दिल की रानी हो सोई हुई अगर
तो एक पहर बैठ के करना तू इन्तज़ार
मुमकिन है नींद में हो मेरे स्वप्न में मगन
करना गरज के ख़्वाब का दामन न तार-तार

श्लोक-३८

वह एक पहर बाद भी जागे न नींद से
फिर भी गरज के उसको डराना न ज़ीनहार[1]
तुझको तेरे खुलूसो-मुहब्बत की है कसम
विरहिन के दिल पे हश्र यह ढाना न ज़ीनहार
बूंदों से अपनी भर के नमीं सी शमीम[2] में
हौले से उसके जिस्म को छूना तू इस तरह
आहिस्तगी से करती है गुलशन में बादे-सुब्ह[3]
ग़ुंचों को अपने लम्स[4] से बेदार[5] जिस तरह
खिड़की की राह तुझको वह देखेगी ग़ौर से
अब क्या कहूँ कि बोलना तू उससे किस तरह
रौशन-ज़मीर ! तुझको है जैसी ज़ुबां मिली
ऐसी ज़ुबान और किसी को कहाँ मिली

---

१. हरगिज़, २. प्रातः की ठण्डी हवा, ३. प्रातः की हवा ४. स्पर्श, ५. जागृत ।

श्लोक-३९

अहसास जिससे हो उसे मेरी हयात का
कहना तू उसको इस तरह पैग़ामे-दिलरुबा[१]
सुन, मेरे दोस्त यक्ष की जाने-हयात ! सुन
है ख़ैरो-आफ़ियत से जहाँ है तेरा पिया
मैं उसका इक अज़ीज़ हूँ, भाई हूँ, दोस्त हूँ
लाया हूँ इक पयाम उसी का कहा हुआ
रख सब्र अपने दिल में, है फिरने पे वक्त खुद
बिछड़े हुओं के मेल की सूरत निकालता

श्लोक-४०

तेरी यह बात सुनके बड़े इश्तियाक से
देखेगी तेरी ओर वह इक बार इस तरह
सीता ने रामदूत हनूमान की तरफ़
देखा था चश्मे-शौक़ से उस वक्त जिस तरह
और इसके बाद देखना तेरी हर एक बात
सुनती रहेगी ध्यान से वह पैकरे-वफ़ा
पैग़ाम दिलरुबा का जो मिल जाए दफ़अतन[२]
फ़ुरक़त ज़दों को वस्ल की राहत है बख़्शता

---

१. प्रियतम का संदेश, २. सहसा-अचानक ।

श्लोक-४१

कुछ ऐसे नर्म लहजे में करना तू गुफ़्तगू[1]
करते हैं बात रंज के मारों से जिस तरह
मैं तुझसे क्या कहूँ कि तू ख़ुद ही है जानता
देते दुखी दिलों को हैं तस्कीन[2] किस तरह
कहना तू उससे मेरा यह दिल का मुआमला
लहजा हो तेरा कान में रस घोलता हुआ
रहता है कोहे-रामगिरि पर तेरा पिया
बदकिस्मती ने तुझसे है जिसको जुदा किया
ख़ुद है बख़ैर, चाहता है ख़ैरियत तेरी
उसने ही तेरे वास्ते पैग़ाम है दिया

श्लोक-४२

तुझसे मिलन की राह है मसदूद[3] हो गई
बेबस हुआ सा दूर है तुझसे पड़ा हुआ
तेरे विरह में हो गया कमज़ोर तेरा यक्ष
अपनी विथा में तेरी विथा को है देखता
तुझसे है उसको ऐसी मुहब्बत कि क्या कहूँ
दिन-रात तेरी फ़िक्र में रहता है ग़र्क-सा

---

१. बातचीत, २. सांत्वना, ३.अवरुद्ध ।

श्लोक-४३

वह यक्ष सबके सामने कहने की बात भी
कहता था राज़े-दिल की तरह तेरे कान में
जिससे कि तेरे गाल का बोसा[१] वह ले सके
दौड़ाए बर्क़ सी तेरे जिस्म और जान में
इस वक्त जब कि दूर है मजबूर है बहुत
मुमकिन नहीं कि पास भी तेरे वह आ सके
बातों से अपनी दिल को तेरे दे सके सुकूं
भेजा है मेरी मारफ़त उसने ही तेरे पास
पैग़ामे-शौक़[२] जो तुझे धीरज बँधा सके

---

१. चुम्बन २. प्रेम का संदेश

श्लोक-४४

नाज़ुक अगर्चे बेल से बढ़कर कोई नहीं
तेरे बदन सी उसमें नज़ाकत मगर कहाँ
होती हैं हिरनियों की भी आँखों को कब नसीब
चितवन में तेरी मैंने जो देखी हैं शोख़ियाँ
इतनी कहाँ मजाल है माहे-तमाम[१] की
ठहरे वह तेरे रूए-मुनव्वर[२] के सामने
मोरों के पंख भी नहीं रखते वह दिलकशी
देखी है मैंने गेसुओ-सुम्बुल[३] में जो तेरे
दरिया की लहर लहर को देखा है ग़ौर से
लेकिन तेरी जबीं[४] के शिकन[५] की कहाँ मिसाल
आती नहीं है सामने तेरे कोई भी चीज़
ऐसा है बेमिसाल तेरा हुस्ने-लाज़िवाल[६]

---

१. पूर्ण चंद्रमा-पूर्णिमा का चांद २.आभावान मुखमंडल
३.केश राशि ४.माथा ५.बल ६.शाश्वत सौंदर्य, कभी नष्ट न
होने वाला रूप लावण्य

श्लोक-४५

पत्थर पे तेरा रूठा हुआ चित्र खींचकर
सजदा किया है तेरे मनाने को जब कभी
यकलख़्त जोशे-ग़म से भर आया है दिल मेरा
आँखों से आँसुओं की झड़ी सी है लग गयी
दुर्भाग्य से नसीब को मन्ज़ूर ही नहीं
कर लें हम इस तरह से भी सूरत विसाल[1] की

श्लोक-४६

बरसात में ज़मीन से आती है सोंधी गंध
ऐसी ही सोंधी गंध तेरे तन से आ रही
महसूस कर रहा हूं यहाँ तुझसे इतनी दूर
अहसास है यह कुर्ब का तेरे करा रही
फुरकत में तेरी हो गया हूँ मैं नहीफ़ो-ज़ार[2]
मुश्किल से कट रहे हैं ये अय्यामे-इंतज़ार[3]

१.मिलन का उपाय २.कृशकाय, ३.प्रतीक्षा के दिन

श्लोक-४७

तुझको गले लगाने की ख़्वाहिश से जब कभी
बाहें ख़ला[१] के बीच हैं मैंने पसार दीं
आँखें खुलीं तो कुछ न मिला यास के सिवा
सपने की सारी लज़्ज़तें भी रायगां[२] गयीं
पाकर बुरी तरह मुझे नाकामे-आरज़ू[३]
वन देवताओं के भी हैं आंसू टपक पड़े
पेड़ों की कोपलों पे वो आँसू सहर[४] के वक्त
ऐसे लगे हैं जैसे हों मोती जड़े हुये

१.शून्य २.व्यर्थ ३.आशा पूरी न हो जिसकी ४.सुबह

श्लोक-४८

पल भर में हों तमाम[1] ये रातें फ़िराक़ की
यह आरज़ू है जिसकी कि तकमील[2] है मुहाल[3]
तप-तप के तेरी गर्मी-ए-फ़ुरकत[4] में रात दिन
सब जिस्मो-जानो-कल्बों-जिगर हैं मेरे निढाल

श्लोक-४९

पेहम[5] ख़ुशी मिली न मिला है किसी को ग़म
तू भी यही समझ कि बस ऐसा नसीब था
सौ-सौ तरह के बांध के दिल में तसव्वुरात[6]
मैं भी हूं अपने आपको धरीज बँधा रहा
बदलेंगे अपने दिन भी बहरहाल एक दिन
दिन रात चल रहा है जब चक्कर यह वक्त का

श्लोक-५०

विष्णु के योगनिद्रा से उठने की देर है
मुद्दत मेरी सज़ा की भी हो जाएगी तमाम
जैसे भी हो गुज़ार ले फ़ुरक़त के चार माह
भर जाएगा ही भरते भरते रंजो-ग़म का जाम
सरदी की रुत में चांदनी रातों में मिल के हम
पूरे करेंगे अपने सब अरमान नातमाम[7]

---

१. पूर्ण २. पूर्णता ३. कठिन ४. विरह का ताप ५. लगातार ६. कल्पनाएं ७. अधूरे

श्लोक-५१

इक बार शब को मेरे गले से लगी हुई
सोती थी तू कि चौंक के बेदार[१] हो गई
पूछा सबब जो मैंने तो कुछ भी न बोलकर
ज़ारो-कतार रोने लगी चीख़ने लगी
इसरार[२] करने पर मेरे बोली तू इस तरह
देखा है मैंने आपको हज़रत अभी-अभी
थे आप महवे-वस्ल किसी और ही के साथ
चलती रही है मेरे दिले-ज़ार पर छुरी

श्लोक-५२

मेरे पयामबर[३] को तू अपना समझ सके
मैंने कही है राज़ की यह बात इसलिये
रह-रह के मेरे दिल को है डर यह सता रहा
तू एतमाद[४] ही न कहीं मुझमें छोड़ दे
कमज़ोर प्यार पड़ता है गर हो तवील हिज्र[५]
लेकिन न इस ख़याल को तू मानना दरुस्त
दरअस्ल प्यार बढ़ता है फ़ुरकत के वक्त में
ऐ जाने-ज़ीस्त[६] बात यही जानना दरुस्त

---

१. यक्ष के वैवाहिक जीवन की एक अंतरंग घटना का उल्लेख अभिज्ञान स्वरूप २. बार-बार का अनुरोध ३. संदेशवाहक ४. निष्ठा ५. लम्बा विरह काल ६. जीवन-प्राण

श्लोक-५३

पहली ही बार उसपे पड़ी है विरह-बिथा[१]
जिसके सबब वह हद से ज्यादा मलूल[२] है
देना तू उसके दिल को तसल्ली यह कहके दोस्त
इतना बिरह में मन को दुखाना फ़ज़ूल है
हो जाएगी यह हिज्र की मेयाद पार जल्द
आ जाएगी विसाल की फ़स्ले-बहार जल्द
फ़िर उसकी ख़ैरियत की ख़बर ले के ऐ नदीम!
कोहे-गिरां से लौट के आना तू जल्द ही
मेरा जो हाल है छुपा तुझसे नहीं ज़रा
कितनी बढ़ी हुई है मेरे दिल की ख़स्तगी[३]

श्लोक-५४

गंभीर और मौन जो तू हो गया है दोस्त
होने लगा है इसका मुकम्मल यकीं मुझे
होगी ज़रूर मुझपे तेरी बारिशे-करम[४]
ले जाएगा पयामे-मुहब्बत[५] को तू मेरे
चातक ने तुझसे जब भी सवाले-करम[६] किया
बारे-करम से तूने नवाज़ा सदा उसे
तकमीले-आरज़ू[७] ही जवाबे-सवाल[८] है
अहले-करम का अपने सवाली के वास्ते

---

१. विरह-व्यथा २. दुखी ३. बुरा हाल ४. कृपा-वृष्टि ५. प्रेम का संदेश ६कृपा की प्रार्थना ७. इच्छापूर्ति ८. याचना का प्रत्युत्तर

श्लोक-५५

या दोस्ती के नाते उठा ज़हमते-करम[1]
या मुझको दर्दे-हिज्र का मारा समझके तू
तुझ से मेरा सवाल[2] है बेशक अजीब सा
जिस तौर भी हो कर मेरी तकमीले-आरज़ू
पहलू में ले के प्यार से बिजली को घूम फिर
करता हूं मैं तिरे लिए दिल से यही दुआ
दिन दुगनी रात चौगुनी रौनक बढ़े तेरी
सहना पड़े न तुझको ग़मे-हिज्र बर्क़[3] का

१. कृपा करने का कष्ट २. याचना, प्रार्थना ३. बिजली, मेघ की प्रियतमा

मुल्तानी भाषा में ग़ज़ल का प्रथम प्रयोग

डॉ. राणा प्रताप गन्नौरी मूलत: उर्दू के सुप्रसिद्ध, प्रतिष्ठित एवं बहुपुरस्कृत कवि हैं । हरियाणा भाषा विभाग का सर्वोच्च सम्मान 'हाली एवार्ड' उन्हें मिल चुका है । हिंदी में भी उनके कई काव्य संग्रह प्रकाशित हुए हैं, जिनमें से एक प्रबंध काव्य भी है । उन्होंने हिंदी-उर्दू के साथ-साथ संस्कृत में भी एम.ए. कर रखी है । हिंदी के तो ये पीएच. डी. (विद्यावाचस्पति) हैं, किन्तु प्रस्तुत कृति ''महक मिट्टी दी'' उनका मलतानी भाषा में रचित ग़ज़लों का सर्वप्रथम स्वतंत्र संग्रह है, जिसका ऐतिहासिक महत्व है ।

पाकिस्तानी पंजाब के पश्चिमी सीमांत प्रदेश में लोगों की मातृभाषा मुलतानी है, जिसे भाषा विज्ञानी 'लैंहदा' नाम देते हैं । सुविख्यात भाषाविद् जार्ज-ग्रियर्सन ने भी भाषाओं का वर्गीकरण करते हुए पश्चिमोत्तर भारत की तीन भाषाओं के वर्ग में पंजाबी, सिंधी के साथ लैंहदा (मुलतानी) का नाम लिया है । लैंहदा शब्द का अर्थ है-अस्त होते हुए सूर्य की दिशा ।

पाकिस्तानी पंजाब का बहावलपुर, मुलतान; मुजफ़्फ़र गढ़, मियावाली तथा सिंधु नदी के पश्चिमी तटपर स्थित डेरा ग़ाज़ीख़न और डेरा इस्माइल ख़ान का संपूर्ण इलाका सामान्यत: मुलतानी भाषाभाषी है । इस भाषा को यहाँ के बुद्धिजीवियों ने एक नया एवं सर्व स्वीकृत नाम अब 'सरायकी' या 'सिरायकी' दिया है । इस लोक भाषा के स्थानीय कुछ रूपभेद होते हुए भी एक स्वतंत्र भाषा के रूप में मान्यता मिल चुकी है । ध्यान रहे कि, भाषा विज्ञान की दृष्टि से यह भाषा पंजाबी से सर्वथा भिन्न भाषा है, क्योंकि दोनों भाषाओं का विकास दो भिन्न अपभ्रंश भाषाओं, क्रमश: शौरसेनी तथा पैशाची (कैकय) से माना जाता है ।

पाकिस्तान की स्थापना होने के पश्चात् वहाँ सरायकी (मुलतानी) भाषा में साहित्य का सृजन साहित्य की लगभग सभी विधाओं (कविता, कहानी, उपन्यास निबंध, समालोचना, जीवनी, आदि) में प्रचुर मात्रा में हुआ है तथा एम.ए. तक की उच्च शिक्षा का माध्यम बन कर वहाँ मुल्तानी भाषा आज साहित्यिक भाषा के रूप में प्रतिष्ठित हो चुकी है । पाकिस्तान में मुलतानी अथवा सरायकी भाषा की लिपि उर्दू है ।

डॉ.राणा प्रताप गन्नौरी का जन्म तथा प्रारम्भिक शिक्षा जिला मुजफ्फ़रगढ़ की तहसील अलीपुर में हुई । मेरा जन्म भी 1926 में इसी जिले की तहसील कोट-अद्दू में हुआ, जो विश्व-विख्यात 'उड़न सिंह' के नाम से लोकप्रिय सरदार मिल्खा सिंह की जन्म भूमि है । अतः राणा गन्नौरी की ग़ज़लोंकी भाषा में तहसील अलीपूर की स्थानीय रंगत झलकती है । सच तो यह है कि डॉ. राणा को मुलतानी भाषा में ग़ज़ल लिखने की प्रेरणा 1987 में अपनी जन्म भूमि की यात्रा करने के पश्चात् मातृ भाषा का ऋण चुकाने की भावना से मिली । फ़िर तो उनके कवि हृदय से 'त्रिवेणी' की धारा फूट पड़ी और देखा-देखी मुलतानी भाषा के अन्य कवियों को भी ग़ज़ल लिखने के लिए प्रोत्साहन मिला । अस्तु !

पुस्तक के शीर्षक से स्पष्ट होता है कि उनकी ग़ज़लों में अपने वतन की मिट्टी की महक समाई हुई है । इन ग़ज़लों में परम्परागत प्रेम, सौंदर्य से सराबोर रूमानी, भावुकता पूर्ण, रागात्मक अनुभूतियों के स्थान पर युगबोध की अभिव्यक्ति हुई है,जो डॉ. राणा को एक समकालीन ग़ज़लकार का गौरव प्रदान करती है, परन्तु कविता चाहे किसी भी भाषा में हो, यह पीड़ा की संतान कही जाती है । अकबर इलाहाबादी के शब्दों में-"दर्द को दिल में दे जगह अकबर, इल्म से शायरी नहीं आती" यह पीड़ा प्रेमजन्य, वियोगजन्य भी होती है तथा समाज की विसंगतियों, विषमताओं, विद्रूपताओं के कारण भी । डॉ. राणा ने कई स्थानों पर इस ओर स्पष्ट संकेत भी किया है, 'ज़हर खौंदे प्यूं, ज़हर पींदे प्यूं, साडी हिम्मत हे वल वी जींदे प्यूं।'

दीन-दुखियों की, शोषित वर्ग की दुर्दशा देख कर उनके साथ होते अन्याय तथा अत्याचर से आहत हो कर कवि को स्पष्ट कहना पड़ता है कि जब तक लोग मानवीय अधिकारों से वंचित रहेंगे और उन बेचारों के मुँह से रोटी का टुकड़ा छीना जाएगा, तब तक विश्व में शान्ति भला कैसे स्थापित हो सकती है ?

'जे हकदार कूं, हूँदा हक नां डिवीसी,
जे शोदे दे मुँह दी घिरई खस घिनीसी ।
जे डुक्खी दे दिल कूं, ज़ियादा डुखीसी,
किवें अम्न ते चैन दुनिया ते थीसी ?'

डॉ. राणा की ग़ज़लों के कितने ही शे'र ऐसे हैं, जो सूक्तियों की तरह जीवन की सच्चाइयों को मार्ग दर्शकबन कर रेखांकित करते हैं जैसे:-

सौ गाल्हीं दा हिक निचोड़,
सब कुछ वंञणै जग विच छोड़।
बेठ्यें तां मंजिल नईं मिलदी
राह निबड़सी टुरद्यें-टुरद्यें ।
सच बोलण तू मूल न डर,
डंड वी भरणा पौवी भर ।
प्यास बुझेंदा नईं कहिंदी,
भावें भर्या समुन्दर हे ।

डॉ. राणा पक्के आर्यसमाजी हैं । उनके जीवन पर स्वामी दयानन्द जी के विचारों की छाप है । आध्यात्मिक संस्कार परिवार से मिले हैं, जिनका प्रतिबिम्ब इन पंक्तियों में देखिए:-

बंदे ए वी सोच कडहाईं,
किथ वंञणे ते कित्थूं आईं ।

अर्थात कहाँ जाओगे और कहाँ से आये हो ?

छोड़ जगत दा कूड़ा मोह,
ला सच्चे मालिक नाल लो ।

उर्दू के महान शायर डॉ. इकबाल की बहुचर्चित नज़्में हैं 'शिकवा', 'जवाब-शिकवा' जिनमें कवि ने परमात्मा से कुछ शिकायतें की हैं और फिर उनका जवाब भी दिया है । डॉ. राणा के ग़ज़ल संग्रह में भी उसी तरह की एक कविता है । बानगी के रूप में ईश्वर की विचित्र लीला के संबन्ध में राणा जी के शिकवे की केवल चार पंक्तियाँ देखिए

ए सोहणे-सोहणे खिड़ावणे तूं
बणा-बणा के भनेंदा क्यूं हईं ?
निमाणी पतली झीं वेल उत्ते
मतीरे पेठे उगेंदा क्यूं हईं ?

अंत में एक अत्यंत संवेदनशील हृदय का स्वामी अलबेला कवि अपनी पीड़ा की संतान 'कविता कामिनी' के संदर्भ में प्रिय पाठकों के लिए कुछ निजी उद्‌गार यूं व्यक्त करता है और अपने शेरों के प्रभावशाली होने का रहस्य बताता है कि वह शब्द आँसुओं में धोकर शेर कहता है ।

'राणा दा शे'र-शे'र हे हीं कर के आबदार
ओ लिखदे लफ़्ज़-लफ़्ज़ कूं हंज विच अघाल के'

साहित्य जगत के लिए तो उसका बस इतना ही कहना है:- पिच्छें पुछदे रह वेसो
राणा वी इत्थां हा कुई

(मेरी मृत्यु के बाद पूछते रह जाओगे कि कोई राणा भी यहाँ होता थां)

डॉ. राणा प्रताप की बहुमुखी प्रतिभा, हिंदी, उर्दू तथा मुल्तानी तीनों भाषाओं में उच्चस्तरीय कवित्व-शक्ति और लेखन उन्हें एक महान साहित्यकार तथा एक विद्वान समीक्षक तो प्रमाणित करता ही है, इससे बढ़ कर ये एक संत स्वभाव के अजातशत्रु आदर्श मानवीय गुणों से ओत-प्रोत व्यक्तित्व भी रखते हैं । मैं उसके यशस्वी और दीर्घायु होने की कामना करता हूँ ।

उदय भानु हंस
राजकवि हरियाणा

अहले नज़र की नज़र में
''तज़करा-ए-शुअरा-ए-हरियाणा''

''तजकरा-ए-शुअरा-ए-हरियाणा'' की जिल्द मिल गई है । बेहद खुशी हुई । आप इन्तहाई मेहनती आदमी हैं । यह काम आपने बहुत अच्छा किया है। इस किताब की तारीख़ी अहमियत है । हरियाणा का उर्दू से क्या रिश्ता है और शुअरा-ए- हरियाणा ने इस ज़बान को फ़िरोग़ देने में क्या हिस्सा लिया है, आपका यह तजकरा इसका काफ़ी-ओ-शाफ़ी जवाब फ़राहम करता है । मुबारक हो।

डॉ. गोपी चंद नारंग

''तज़करा-ए-शुअरा-ए-हरियाणा'' का सेहरा आपके सर है । अब कोई इसमें इज़ाफ़ा करे करे । अवलीयत आपने हासिल करली है । इसलिए काबिले मुबारकबाद है।

डॉ. जावेद वशिष्ट

''तज़करा-ए-शुअरा-ए-हरियाणा'' की जिल्द मिल गई है । आपकी मसाई काबिले सताइश हैं । मेरा ख़याल है कि हरियाणा के शुअरा का ऐसा जामिअ़ तज़करा शायद अब तक मंज़रे-आम पर नहीं आया । मैं अंदाज़ा लगा सकता हूँ कि यह काम किस कदर काविश तलब था और इसके लिए आप को क्या-क्या कोशिशें करना पड़ी होंगी। यह किताब एक अहम दस्तावेज़ की हैसियत रखती है और बरसों तक हवालाजाती किताब के तौर पर इस्तेमाल होती रहेगी।

प्रो. आज़ाद गुलाटी

''आप की काविश तज़करा-ए-शुअरा-ए-हरियाणा, हर लिहाज़ से काबिले तारीफ़ है । मुबारक हो ।

स्व. सोमनाथ 'काश' जगाधरी

''तज़करा-ए-शुअरा-ए-हरियाणा'' जैसी किताब शाय करना आप ही का हिस्सा है जो काबिले सददाद है ।''

'आज़ाद' सोनीपती

असलूब बे नज़ीर है अंदाज़ बेमिसाल
यह तज़करा है वाकई तख़लीके-लाज़िवाल''

स्व. आतिश बहावलपुरी

मुलतानी हिंदी शब्दकोश: वर्तमान का भावी पुरालेख

डॉ. मन मोहन सहगल
पूर्वाध्यक्ष हिंदी विभाग पंजाबी वि.वि. पटियाला

जब एक सुप्रसिद्ध कवि, समीक्षक और अध्यापक अकसमात् कोशकार के रूप में सम्मुख आ खड़ा होता है, तो आश्चर्यमयी प्रसन्नता और गुदगुदाते अहसास के कारण हम सोचने को मजबूर हो जाते हैं कि कवि की भावुकता के पीछे अथाह कार्य-शक्ति और वैयाकरण का नियंत्रण अब तक कहाँ छिपे हुए थे । डॉ. राणा प्रताप सिंह गन्नौरी को हम एक अकादमिक लेखक और स्थापित कवि के रूप में ही जानते थे किन्तु उसके भीतर की वह क्षमता जो व्यक्ति को संस्था बना सकती है, हमसे अजानी थी । किन्तु उनकी नव्यतम रचना 'मुलतानी हिंदी शब्दकोश' को देखकर सहसा उनकी बहुज्ञता और भाषा क्षेत्र में अनेक भाषाओं पर उनका विशेषाधिकार हमें स्तम्भित कर देते हैं । निश्चय ही किसी जीवित अथवा मृतप्राय भाषा का शब्दकोष बनाना अत्यन्त श्रमसाध्य और जटिल कार्य है । डॉ. गन्नौरी यद्यपि राजनीतिक कारणों से त्रस्त मुलतानी भाषा-भाषी प्रदेश का त्याग करके हिंदी भाषी प्रदेश में चले आये हैं लेकिन मातृभाषा तो उनकी धमनियों में रक्त की भांति प्रवाहित होती है ।

बीसियों वर्षों तक डॉ. गन्नौरी ने अपनी मातृ-भाषा कोअपने सीने में लौ की तरह छिपाकर उसकी शब्दावली और नियमावली का अध्ययन किया । मुलतानी में सम्मिलित हो जाने वाले तत्सम और तद्भव शब्दों का संचय किया । मुलतानी में आने वाले शब्द रूपों का आद्यांत अध्ययन कर विकासशील शब्दावली के अर्थ निश्चित किये और अन्तत: अपनी अर्द्धशती की उक्त सारी मेहनत को प्रस्तुत शब्दकोश के रूप में भाषा-प्रेमियों को सौंपने का महनीय कार्य किया है । साधुवाद ।

इस शब्द कोश का एक ही समय में भाषा वैज्ञानिक, साहित्यिक, सामाजिक, और ऐतिहासिक महत्व है । समय के साथ इस पुस्तक का मूल्य बढ़ेगा और वह समय दूर नहीं जब यह पुरातात्विक महत्व प्राप्त कर लेगी ।

महक मिट्टी दी

आकाशवाणी से प्रतिदिन सायं ३० मिनट की अवधि का सरायकी कार्यक्रम प्रसारित किया जाता है, जिसमें शामिल की जाने वाली रचनाओं के लिए दूर-दूर तक रचनाकारों की तलाश हमें रहती है । लेकिन पिछले दिनों बहुत आश्चर्य हुआ जब सरायकी बोली में लिखी काव्यरचनाओं का संग्रह ''महक मिट्टी दी' प्राप्त हुआ । इस रचना के रचनाकार डॉ. 'राणा'से मेरा परिचय काफ़ी पुराना है । उनकी पहचान प्राध्यापक के रूप में और उर्दू-हिंदी कवि के रूप में इस पूरे क्षेत्र में की जाती है । यूँ तो सरायकी रचनाएं पूरे क्षेत्र में की जाती हैं तथा कभी-कभी मुशायरों में भी ग़ज़लों नज़्मों को सुनने का आनन्द मिलता है परन्तु संग्रह के रूप में सरायकी कविता का कोई ग्रंथ उपलब्ध नहीं था । इसलिए डॉ. राणा का यह प्रथम प्रयास न सिर्फ़ हौसले का काम है बल्कि प्रशंसा योग्य भी है। डॉ. गन्नौरी के व्यक्तित्व की सादगी और कृतित्व की सम्पन्नता में यह संग्रह एक और अध्याय जोड़ देता है । इस संग्रह की रचनाओं में ग़ज़लें और नज़्में शामिल हैं लेकिन ख़ूबसूरती यह हैकि जिस अंदाज़ से मुहावरों का प्रयोग किया गया है वह विलक्षण है । राणा साहब के इस संग्रह में जहाँ भावगर्भित अश'आर मौजूद हैं वहीं उपदेशक की मुद्रा भी सुखद प्रतीत होती है ।

हीं रस्ते तूं मंज़िल ते नें पुज सगदा
जेढ़े पुट्ठे रस्ते उत्ते वेंदा पईं

या फिर इसी अंदाज़ में वे कहते हैं कि:-

डेवीं आपणो दर्द का दारू मेकूं
तेडा दर्द मेडी दवा थींदा वेंदे

और हास्य का पुट देते हैं तो यूँ फ़रमाते हैं:-

नेता साडे डांवां डोल
जनता थी गई हे डगमग

यह रंग भी ख़ास है:-

फूक-फूक अगला कदम रखीं जहान इच सोहणा !
जे ज़रा चुक्यों तां हर शख़्स तुंबेसी तेकूं

पढ़दा लिखदा नें तूं लाल !
वदा वटेसें पिच्छें वाण
प्रचलित मुहावरों की सार्थकता स्पष्ट करता यह शेर भी खूब है
'तेडी तर्हां शराफ़त दा मैं पाता उतुं लुबादा कैनी'
सरायकी बोली में समृद्धता का परिचय उनके इस शेर में मिलता है।
'ज़मीं ते रह के वी आदमी का दिमाग़ हे आस्मान उत्ते
अनेसी आफत ज़रूर कोई ए रसदे-वसदे जहान उत्ते'
और इन्ही परतों के भीतर रची-बसी दार्शनिकता को बड़े सहज स्वभाव से डॉ. गन्नौरी यूँ व्यक्त करते हैं:-
'खुद तराशणा पत्थर वल खुदा बणा घिनणा
आदमी कूं औंदा हे क्या तूं क्या बणा घिनणा'
'ए हुनर ज़माने विच सार्यें कूं नहीं औंदा
त्रुट्यें भन्यें शइयें कूं कार दा बणा घिनणा'
बहुअर्थी रचना की एक बानगी यह भी है:-
'न मैं खौंदा ते न ही मैं पींदां
तुस्सां पुछसो ते सई किवें जींदा'
इसी संग्रह में गायत्री मंत्र का अनुवाद, स्वामी दयानन्द सरस्वती तथा कुछ रचनाएँ श्रद्धाँजलि स्वरूप भी शामिल की गई हैं। इन रचनाओं को पढ़ने का आनन्द ठेठ सरायकी जानने वालों को कितना आएगा इसका अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि इन्होंने मुझ जैसे अल्पज्ञ को भी गहरे तक छुआ है, गुदगुदाया है और सरायकी के विशाल शब्द-पटल का परिचय दिया है।

मुझे पूरी उम्मीद है कि देवनागरी लिपि में छपा यह संग्रह एक महत्वपूर्ण दस्तावेज़ बनकर सरायकी भाषियों को आनन्दित करता रहेगा तथा कुछ अन्य रचनाकारों को प्रयास करने हेतु प्रेरित करता रहेगा। इस सफल प्रकाशन के लिए डॉ. राणा गन्नौरी हेतु ढेर सी शुभकामनाएँ।

श्रीवर्धन कपिल
केंद्र निदेशक, आकाशवाणी जालंधर

कवि परिचय

नाम : राणा प्रताप सिंह 'राणा गन्नौरी'

पिता का नाम : श्री जयमुनी लाल भुटानी

माता का नाम : श्रीमती रामदेवी

जन्म तिथि : 3 जून 1938

जन्म स्थान : गाँव जहानपुर, त. अलीपुर, जि. मुजफ़्फ़रगढ़
(पाकिस्तान)

शैक्षणिक योग्यताएं : एम.ए. (उर्दू,हिंदी, संस्कृत),पी. एच-डी.
(हिंदी)

भाषाएं जिनमें रचना
करते हैं : हिंदी, उर्दू, सरायकी (मुल्तानी)

सम्प्रति : सेवा निवृत्त प्राध्यापक, हिंदी विभाग, आर. के एस. डी. कालेज, कैथल (हरियाणा)

स्थायी निवास व
वर्तमान पता : 1560, सैक्टर-12, हुड्डा, पानीपत (हरियाणा) 132103

दूरभाष : 0180-2665928, मो. 9896004545

प्रकाशित कृतियाँ
(उर्दू एवं हिंदी) : 1. तरंगें, 2. रश्मियाँ, 3. मेघदूत (उर्दू में पद्यानुवाद) 4. फ़ानूसे-ख्याल, 4. क्रान्तिदूत महर्षि दयानन्द (चरित काव्य) 6. रअ़नाइये-ख़याल,

7. तज़करा-ए-शुअरा-ए हरियाणा, 8. रोशनी की लकीर, 9. हरियाणा के शायर, 10. सन्नाटे की आवाज़, 11. सफ़र नामा पाकिस्तान, 12. महक मिट्टी दी (मुल्तानी ग़ज़ल संग्रह)13. मुल्तानी-हिंदी शब्द कोश, 14. मीठे बोल, 15. मेघदूत (हिंदी)

सम्पादित कृतियाँ : 1. यात्रा शब्दों की, 2. फ़िराक़ गोरखपुरी का कलाम, 3. आर्य रत्न प्रो. उत्तम चन्द 'शरर' अभिनन्दन ग्रंथ ।

अप्रकाशित कृतियाँ : कुछ शगूफ़े कुछ शरारे (उर्दू मुक्तक संग्रह) 2. चकमक की चिंगारियाँ (निबन्ध संग्रह), 3. हिंदी उर्दू काव्य में राष्ट्रीय भावना: तुलनात्मक अध्ययन (1900-1947) शोध प्रबन्ध, 4. लरज़ते अहसास (ग़ज़ल संग्रह), 5. कोई मेरे दिल से पूछे (ग़ज़ल संग्रह) ।

साहित्यिक उपलब्धियाँ

(पुरस्कार एवं सम्मान):

1. अखिल भारतीय हाली अवार्ड, 'फ़ानूसे-ख़्याल' पर भाषा विभाग हरियाणा द्वारा 1973-74,
2. बालसाहित्य का प्रथम पुरस्कार 'मीठे बोल' पाण्डुलिपि पर भाषा विभाग हरियाणा द्वारा 1974-75,

3. रअ़नाइए-ख़याल पर पुरस्कार 1981, उर्दू अकादमी उ.प्र. द्वारा, 4. तज़करा-ए-शुअरा-ए-हरियाणा (उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिमी बंगाल तथा हरियाणा) अकादमियों द्वारा पुरस्कार,

5.मेघदूत पर उत्तर प्रदेश तथा बिहार अकादमियों द्वारा पुरस्कार, 6. हरियाणा की प्रतिनिधि कविता (सं. श्री माधव कौशिक) में सम्मिलित,

सम्मान : 1. अंजुमन तरक्की उर्दू हरियाणा, सोनीपत द्वारा 2. अखिल भारतीय हिंदी साहित्य परिषद् फ़तेहगंज, बरेली, उत्तर प्रदेश द्वारा साहित्यालंकार की उपाधि (1988), 3. जयशंकर प्रसाद शताब्दि समारोह समिति हिसार द्वारा सम्मानित (1989), 4. साहित्य सभा कैथल द्वारा सम्मानित (1993), 5. ज़िला प्रशासन कैथल द्वारा सम्मानित

6. हरियाणा उर्दू अकादमी द्वारा अखिल भारतीय अवार्ड (1992-93)-अगस्त 1995, 7. हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा (नवम्बर 2003) ''राष्ट्र भाषा रत्न'' की उपाधि,

7. केंद्रीय आर्य युवा परिषद् द्वारा आर्य श्रेष्ठी सम्मान

साहित्येतर अभिरुचि : 1. होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति

2. समाज सेवा की गतिविधियाँ

3.आर्य समाज की सेवा
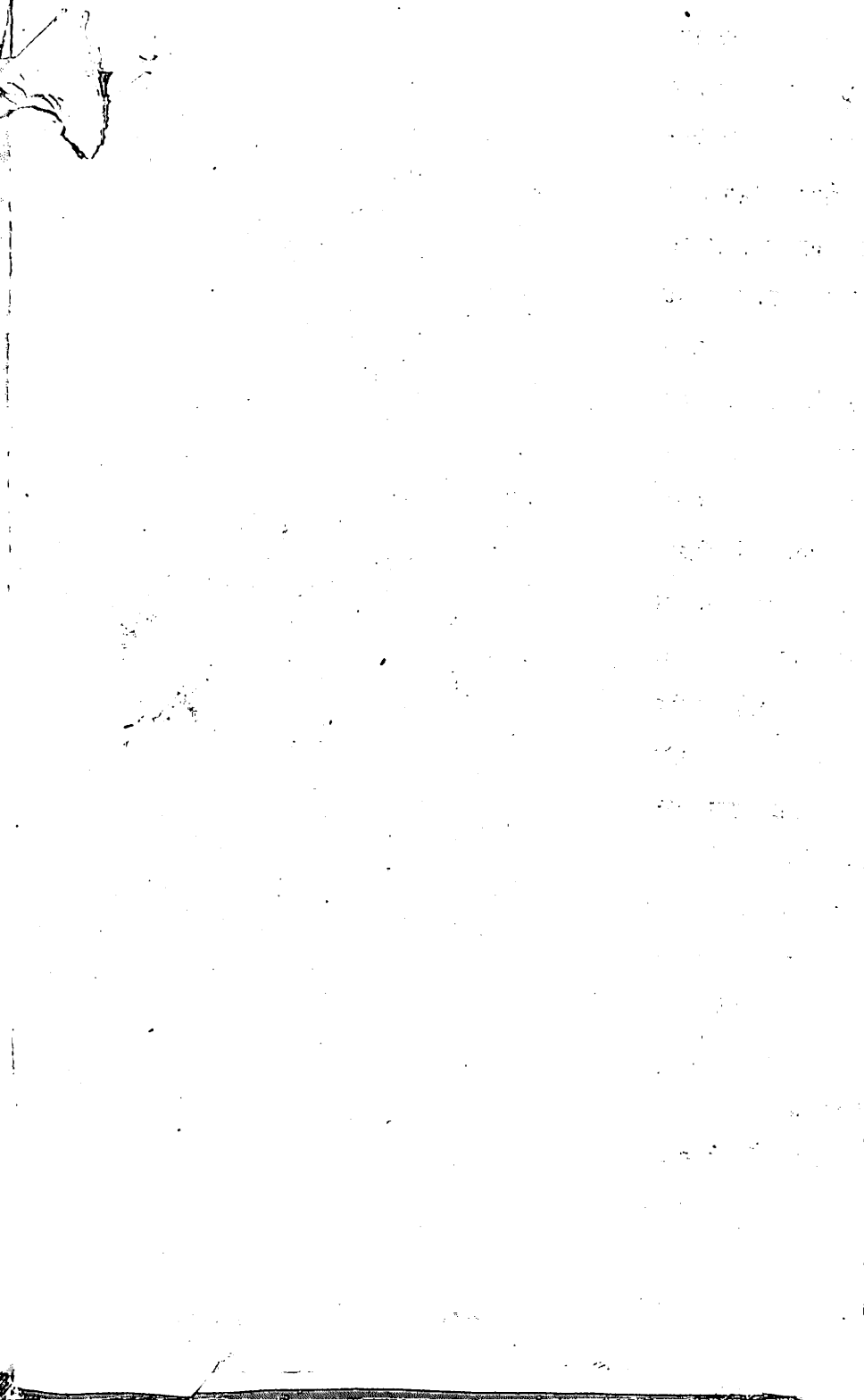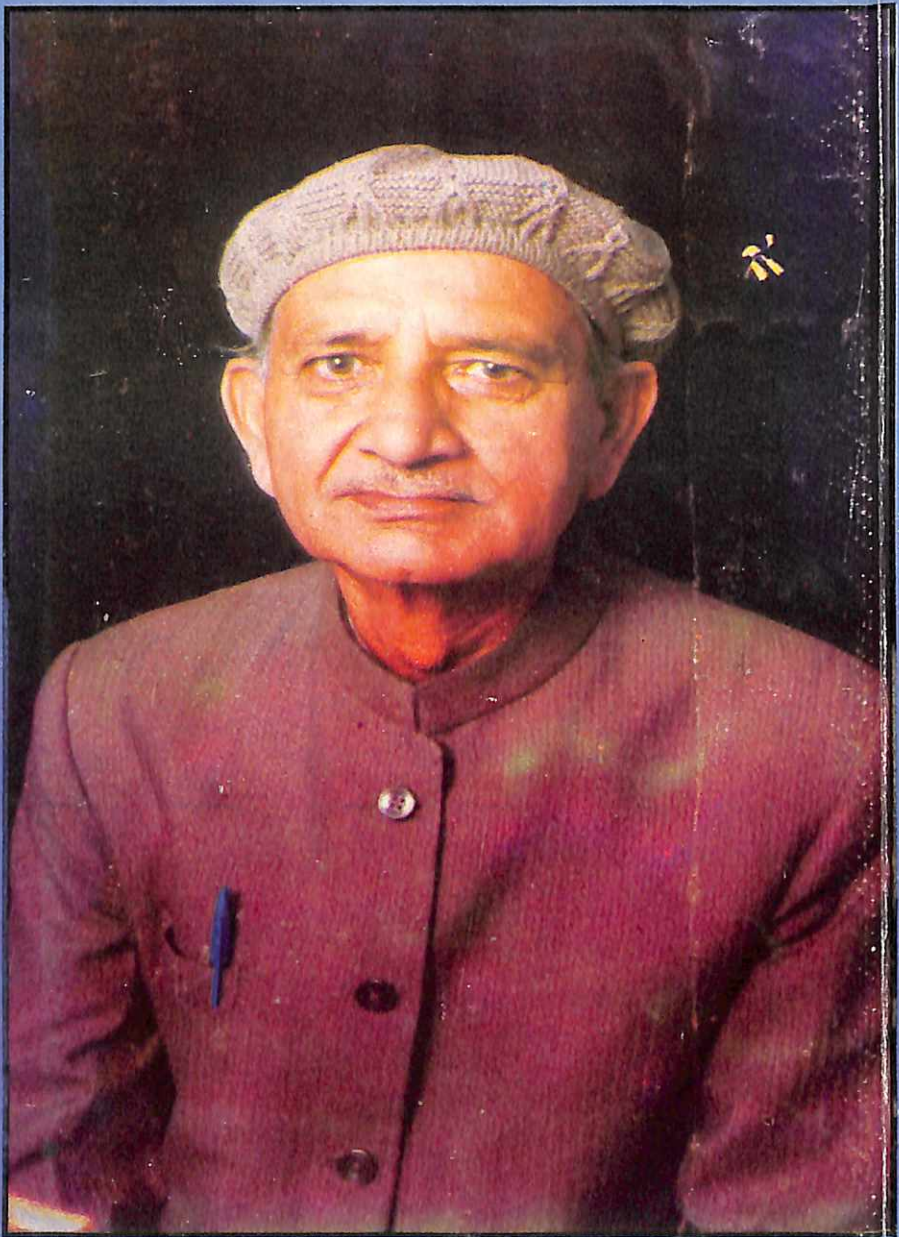
डॉ० राणा प्रताप सिंह 'राणा गन्नौरी'

डॉ० राणा प्रताप सिंह 'राणा गन्नौरी'